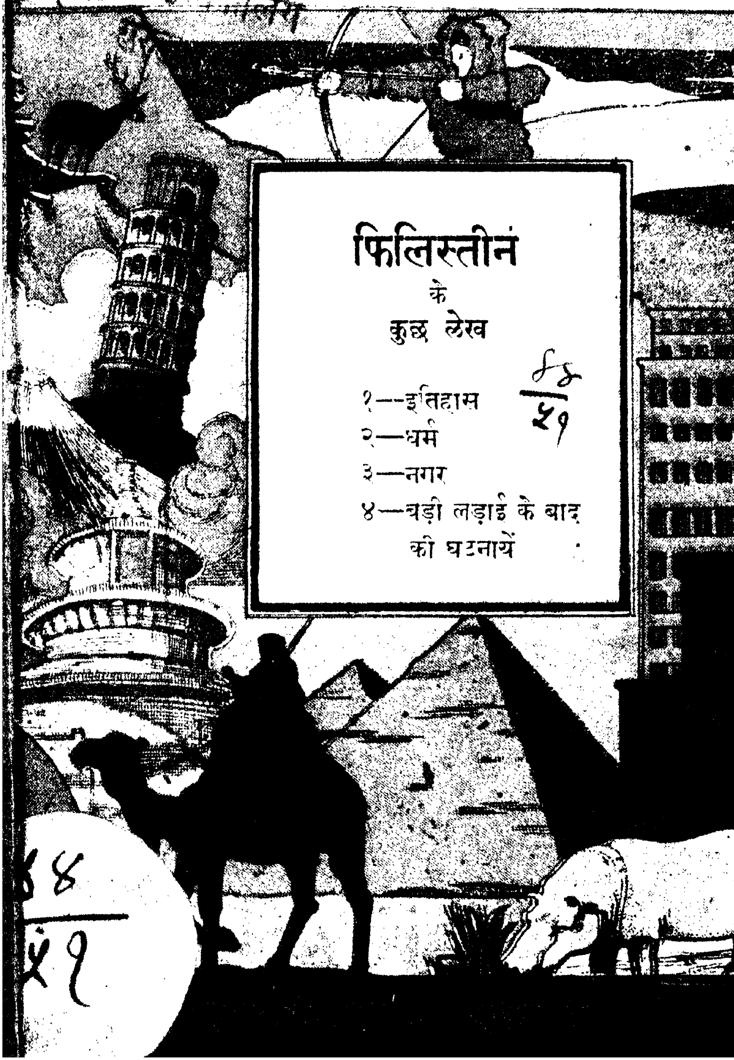
पैलेस्टाइन



फिलिस्तीन

के

कुछ लेख

१—इतिहास
२—धर्म
३—नगर
४—बड़ी लड़ाई के बाद
की घटनायें

अगस्त १९३९] # देश-दर्शन [भाद्रपद १९९६

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

संख्या ३] [वर्ष १

पेलेस्टाइन

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs.	Rs. 4/-
Foreign	Rs. 6/-
Single copy	As. -/6-

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
एक प्रति	।=)

आवश्यक सूचना

देश-दर्शन की योजना तयार करते समय प्रतिमास देश-दर्शन को प्रकाशित करने का निश्चय किया गया था। लेकिन इस बार भूगोल-प्रेस का मकान बदलने और दूसरी बाधाओं के आ पड़ने के कारण मई और जून में देश-दर्शन का प्रकाशन बन्द करना पड़ा। जुलाई महीने का देश-दर्शन भी समय से न निकल सका। अतः अब अगस्त में पेलेस्टाइन या फिलस्तीन अंक पाठकों की सेवा में पहुंच रहा है। आशा है उदार पाठक इस त्रुटि को क्षमा करेंगे।

विषय सूची



पेलेस्टाइन (फिलिस्तीन) का एक साधारण दृश्य

स्थिति

भूमध्यसागर के किनारे फिलिस्तीन पश्चिमी एशिया का सब से छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल केवल १०,००० वर्ग मील है जो हमारे जैपुर राज्य का दो तिहाई है। बड़ी लड़ाई के समय में यहां तुर्की साम्राज्य था। इसके बाद राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) के आदेशानुसार यहां ब्रिटिश शासन हो गया। तब से इस की नई सीमायें बहुत कुछ बदल गईं। इसके पश्चिम में भूमध्य सागर, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण में मिस्र अकाबा की खाड़ी (लाल सागर) पूर्व में ट्रान्स जार्डन उत्तर में सिरिया (शाम) और लेबनान हैं। ट्रान्स जार्डन में भी ब्रिटिश शासन है। जार्डन की घाटी इसे पेलेस्टाइन से अलग करती है। इसकी अधिक से अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक १४० मील और चौड़ाई उत्तर में २३ मील और दक्षिण में ८० मील है। इतना छोटा होने पर भी पेलेस्टाइन देश संसार के तीन बड़े धर्मों (यहूदी, इस्लाम, और मसीही) की धर्म भूमि और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का केन्द्र है। यहां होकर योरुप से हिन्दुस्तान के लिये सुगम स्थल-मार्ग और सब से छोटा हवाई मार्ग जाता है। इसके दक्षिणी सिरे से स्वेज़ के जल-मार्ग का भी नियन्त्रण किया जा सकता है।

सूचना

पेलेस्टाइन एक प्राचीन पठार का अंग है जो भूमध्य सागर के रेतीले तट से भीतर की ओर ऊँचा होता गया है। इस के बीच बीच में ज़मीन टूट कर धंस गई है। ज़मीन उत्तर से दक्षिण की ओर धंसती चली गई है। सब से अधिक धंसाव जार्डन घाटी और मृतक (मरा) सागर में है। यह संसार भर में अत्यन्त खारी और और घना समुद्र भूमध्य सागर के तल से २६०० फुट नीचा है। धंसी हुई और नीची ज़मीन के समानान्तर पहाड़ियां भी उत्तर से दक्षिण को चली गई हैं। जार्डन घाटी के पूर्व में पहाड़ियों की दिशा पश्चिम से पूर्व की ओर है। कुछ भागों में प्राचीन चट्टानें ऊपर दिखाई देता हैं। कुछ भागों में वे नई मिट्टी के नीचे छिप गई हैं। दो ज़िलों में लावा की काली मिट्टी फैली हुई है। इस में वर्षा का पानी भिद जाता है। टूटने से यह मिट्टी बड़ी उपजाऊ हो जाती है। पूर्व की ओर पठार एक दम जार्डन घाटी की ओर ढालू हो गया है। उदाहरण के लिये बेतलहम नगर मरासागर से केवल १४ मील दूर है। लेकिन यह महासागर के तल से ३८४२ फुट ऊंचा है। साधारण समुद्र-तल से यह ५१५० फुट ऊंचा है। अपना

कलकत्ता शहर समुद्र से लगभग ८० मील दूर है। फिर भो हय समुद्र तल से केवल २० फुट ऊंचा है।



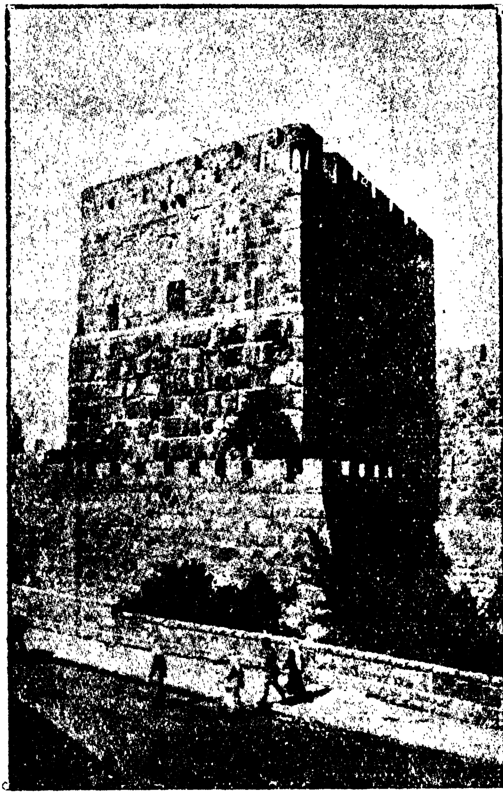
१—यरुशलम में भले सेमेरिटन की सराय

देश दर्शन

पेलेस्टाइन देश तीन प्राकृतिक विभागों में बँटा हुआ है।

(१) भूमध्यसागर का तटीय मैदान लेबनान से मिस्र देश तक चला गया है। यह तटीय मैदान अत्यन्त उपजाऊ है। यह समुद्र की तली और उभरे तट के उठ जाने और सूख जाने से बना है। इसकी चौड़ाई सब कहीं एक सी नहीं है। कासिमिया नदी के मुहाने के पास इस मैदान की चौड़ाई ४ मील है। टायर नगर के दक्षिण तक मैदान इतना ही चौड़ा है। यहां से आगे यह एकदम तङ्ग हो गया है और छोटी छोटी पहाड़ियां समुद्र तक चली गई हैं। एस-अल्-आबियाद के दक्षिण में इस की चौड़ाई कुछ (१ मील) बढ़ गई है और पांच मील हो गई है। हैफा नगर के दक्षिण में कार्मेल अन्तरीप ने मैदान को लुप्त सा कर दिया है। यहां इसकी चौड़ाई २०० गज़ से अधिक नहीं है। दक्षिण की ओर इसकी चौड़ाई बढ़ गई है। अथलीन के पास मैदान २ मील चौड़ा है। इसके आगे इसकी चौड़ाई लगभग २० मील है। इस तङ्ग तटीय मैदान को कई छोटी छोटी नदियां पार करती हैं। लेकिन उनमें शीतकाल

में वर्षा के समय में ही पानी रहता है। और महीनों में



२—यरुशलम में सम्राट दाऊद (डेविड) का बुर्ज

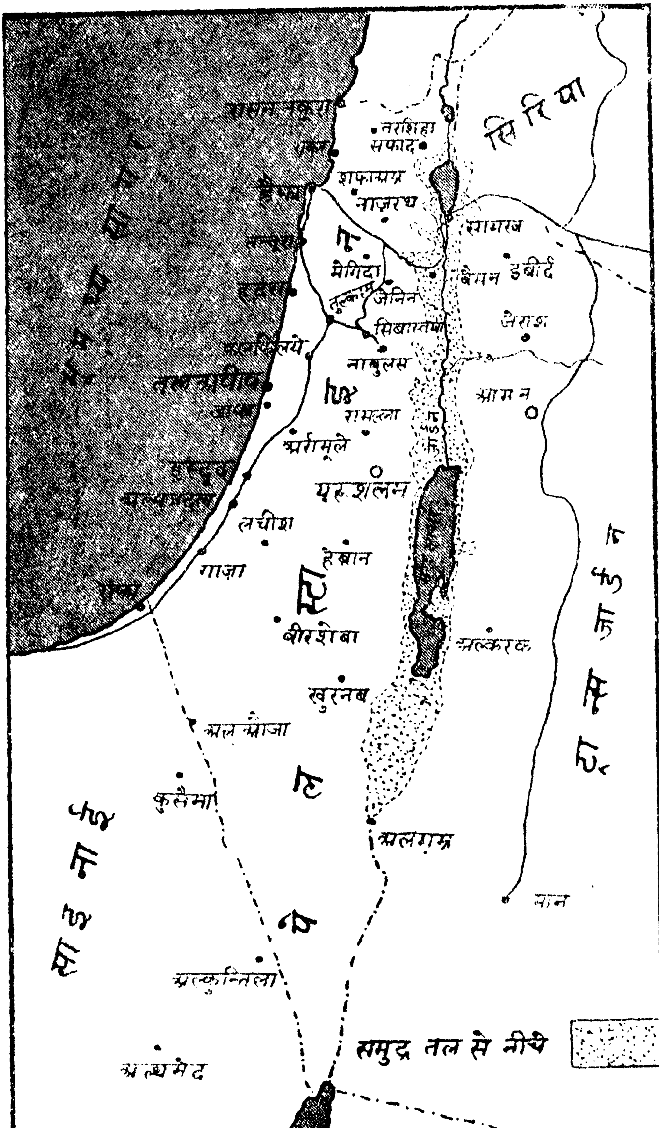
वे सूखी पड़ी रहती हैं। इस उपजाऊ मैदान में पुराने

समय से नारंगी आदि फल और गेहूं, जौ आदि अन्न उगते रहे हैं।

(२) पर्वतीय प्रदेश—यह प्रदेश २५ मील से ४० मील तक चौड़ा है। और भूमध्यसागर के समानान्तर चला गया है। उत्तर की ओर पहाड़ी प्रदेश का एक सिरा समुद्र के पास तक पहुँच गया है। जज़रील या एस्ड्रेलान के उपजाऊ मैदान ने इस पहाड़ी भाग को दो भागों में बांट दिया है। इस का उत्तरी भाग गेलिली कहलाता है। नाज़रथ इस पहाड़ी प्रदेश के बीच में है। पहाड़ी प्रदेश का दक्षिणी बड़ा भाग समेरिया और जूडिया कहलाता है। यरूशलम या जरूशलम जूडिया के प्रायः बीच में है। पहाड़ी प्रदेश का कुछ भाग चूने के पत्थर की कड़ी चट्टानों का बना है जिस में पानी नहीं भिद सकता है। कुछ भाग खड़िया की मुलायम चट्टानों का बना है। जिनमें पानी बड़ी आसानी से भिद जाता है। चट्टानों की मुटाई कुछ इञ्चों से लेकर कई फुट तक है। जहां चूने का पत्थर है वहां प्रायः नङ्गी वीरान पहाड़ियां हैं। बीच बीच में कई सूखी घाटियां हैं। खड़िया के प्रदेश में पानी ने काट काट कर जहां तहां कुछ

चपटे और छोटे मैदान बना दिये हैं। गेलिली में पहाड़ियां कम खुश्क हैं। यहां कई जगह लावा की तहें मिलती हैं।

(३) अल् गोर या जार्डन की धंसी हुई रिफ़्ट घाटी संसार के दूसरे धंसे हुये प्रदेशों में अत्यन्त विचित्र है। यह लम्बी और सीधी घाटी १० मील से लेकर १५ मील तक चौड़ी है। इसके किनारे बहुत ही सपाट हैं। इस की तली प्रायः समतल है। उत्तर में गेलिली से दक्षिण में मरा सागर तक इसका तल समुद्र-तल से कहीं अधिक (१२९२ फुट) नीचा है। मरा सागर की औसत गहराई १००० फुट है। इसकी तली समुद्र-तल से २६०० फुट नीची है। वर्षा की कमी से यह भाग प्रायः खुश्क रहता है।



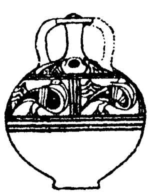
सिरिया
नरशिहा
सफाद
नाज़रथ
मेगिदो
जेनिन
नाबुलस
रामल्ला
यरुशलम
लचीश
हेब्रान
गाज़ा
बीरशेबा
खुरनब
अल औजा
कुसैमा
अल्कुन्तिला
इर्बीद
जेराश
आमन
अल्करक
समुद्र तल से नीचे

जलवायु

बनावट के अनुसार पेलेस्टाइन के भिन्न भिन्न भागों में जलवायु में भी अन्तर पड़ गया है। भूमध्य सागर के किनारे वाले भाग की जलवायु कुछ कुछ समशीतोष्ण रहती है। सरदी की ऋतु में इस तट का तापक्रम ५० अंश फारेन हाइट से ऊपर रहता है। गरमी में यहाँ का क्रम ८० अंश फारेन हाइट से अधिक नहीं बढ़ने पाता है। सरदी में पाला शायद ही कभी पड़ता हो। बरफ तो इस तटीय भाग में कभी नहीं गिरती है। शीतकाल में भूमध्यसागर की ओर से हवायें आती हैं। यही पानी बरसाती हैं। गाजा नगर में साल में ४१ दिन पानी बरसता है और लगभग १६ इंच पानी बरसता है। जाफा में ५६ दिन पानी बरसता है और २३ इंच वर्षा होती है। हैफा में ६२ दिन पानी बरसता है और २७ इंच वर्षा होती है। इस प्रकार तट का दक्षिणी भाग अधिक खुश्क और उत्तरी भाग नम है। ईस्टर की वर्षा के बाद शीतकाल की वर्षा समाप्त हो जाती है। गरमी की ऋतु में बहुत कम पानी बरसता है।

पहाड़ी भाग में ऊँचाई के कारण तापक्रम कम हो जाता है। यरूशलम में जनवरी महीने का तापक्रम ४५

अंश और जुलाई का ७४ अंश फारेन हाइट होता है। सरदो की ऋतु में अक्सर पाला पड़ता है। कभी कभी बरफ भी गिर जाती है। ऊँची चोटियों पर अधिक वर्षा होती है। यरूशलम में साल भर में २६ इंच और नाज़रथ में २७ इंच पानी बरसता है। सरदी में ओस भी खूब गिरती है। इससे फसल को बड़ा लाभ होता है। भीतर की धंसी हुई घाटी की जलवायु विकराल हो जाती है। गरमी की ऋतु में कहीं कहीं १३० अंश फारेन हाइट तक तापक्रम हो जाता है। २४ घंटे में तापक्रम ३२ अंश फारेन हाइट से ८० अंश तक हो जाता है। भीतर की ओर वर्षा कम हो जाती है। गेलिली झील के किनारे बसे हुए तबरिया नगर में २० इंच वर्षा होती है। लेकिन मरा सागर के पड़ोस के स्थानों में वर्षा का प्रायः अभाव रहता है।

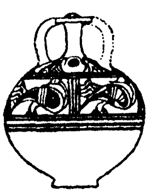


जलवायु

बनावट के अनुसार पेलेस्टाइन के भिन्न भिन्न भागों में जलवायु में भी अन्तर पड़ गया है। भूमध्य सागर के किनारे वाले भाग की जलवायु कुछ कुछ समशीतोष्ण रहती है। सरदी की ऋतु में इस तट का तापक्रम ५० अंश फारेन हाइट से ऊपर रहता है। गरमी में यहाँ का क्रम ८० अंश फारेन हाइट से अधिक नहीं बढ़ने पाता है। सरदी में पाला शायद ही कभी पड़ता हो। बरफ तो इस तटीय भाग में कभी नहीं गिरती है। शीतकाल में भूमध्यसागर की ओर से हवायें आती हैं। यही पानी बरसाती हैं। गाजा नगर में साल में ४१ दिन पानी बरसता है और लगभग १६ इंच पानी बरसता है। जाफा में ५६ दिन पानी बरसता है और २३ इंच वर्षा होती है। हैफा में ६२ दिन पानी बरसता है और २७ इंच वर्षा होती है। इस प्रकार तट का दक्षिणी भाग अधिक खुश्क और उत्तरी भाग नम है। ईस्टर की वर्षा के बाद शीतकाल की वर्षा समाप्त हो जाती है। गरमी की ऋतु में बहुत कम पानी बरसता है।

पहाड़ी भाग में ऊँचाई के कारण तापक्रम कम हो जाता है। यरूशलम में जनवरी महीने का तापक्रम ४५

अंश और जुलाई का ७४ अंश फारेन हाइट होता है। सरदी की ऋतु में अक्सर पाला पड़ता है। कभी कभी बरफ भी गिर जाती है। ऊँची चोटियों पर अधिक वर्षा होती है। यरूशलम में साल भर में २६ इंच और नाज़रथ में २७ इंच पानी बरसता है। सरदी में ओस भी खूब गिरती है। इससे फसल को बड़ा लाभ होता है। भीतर की धंसी हुई घाटी की जलवायु विकराल हो जाती है। गरमी की ऋतु में कहीं कहीं १३० अंश फारेन हाइट तक तापक्रम हो जाता है। २४ घंटे में तापक्रम ३२ अंश फारेन हाइट से ८० अंश तक हो जाता है। भीतर की ओर वर्षा कम हो जाती है। गेलिली झील के किनारे बसे हुए तबरिया नगर में २० इंच वर्षा होती है। लेकिन मरा सागर के पड़ोस के स्थानों में वर्षा का प्रायः अभाव रहता है।



बनस्पति

पशु और बनस्पति

पेलेस्टाइन के कई भागों में काफी वर्षा होती है। लेकिन चूने की चट्टानों में होकर पानी नीचे बैठ जाता है। इसी से कुएं और चश्मे पुराने समय से बड़े महत्व के हैं। स्थान स्थान की जलवायु में भेद होने के कारण इस छोटे से देश में कई प्रकार की बनस्पति है। खुश्क जार्डन-घाटी की बनस्पति अर्द्ध रेगिस्तानी है। तटीय मैदान में भूमध्य सागर के प्रदेश की बनस्पति है। पहाड़ी भाग में इन दो प्रदेशों से भी कम बनस्पति हैं। लेकिन पौधे कई प्रकार के हैं। बसन्तऋतु में हरियाली से ढके हुए इस देश के बहुत से भागों का दृश्य बड़ा मनोहर होता है। गरमी की खुश्क ऋतु में हरियाली झुलस कर वीरान हो जाती है।

यहां के जानवर प्रायः खुश्क प्रदेश के जानवर हैं। भेड़ बकरी दूध और माँस के लिये पाली जाती हैं। वास्तव में यह गड़रियों का देश है। इसी से इञ्जील और यहां के दूसरे ग्रन्थों में गड़रियों और भेड़ों का वर्णन आता है। ऊंट, घोड़े और गधे बोझ ढोने वाले जानवर हैं। गधे पर सवारी भी की जाती है। जङ्गली भागों में बन-

बिलाव, चीता और तेंदुआ पाया जाता है। यहां शेर अब कहीं नहीं पाया जाता है। भेड़िया, लोमड़ी, हिरण और गीदड़ बहुत हैं। उल्लू, गिद्ध, तीतर, चिमगादड़, शहद की मक्खी खाने वाली चिड़ियाँ, और गाने वाली चिड़ियाँ बहुत हैं। नदियों और झीलों में कई तरह की मछलियां हैं। घड़ियाल बहुत कम हैं। मरा सागर में नमक की अधिकता होने से किसी प्रकार की मछली या जानवर जिन्दा नहीं है।

उपज

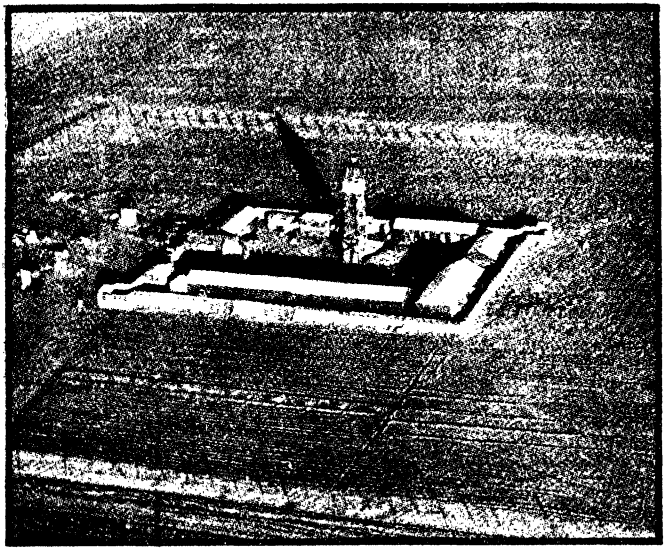
पेलेस्टाइन देश की बहुत सी ज़मीन उजाड़ है जहाँ भेड़ पालने का काम भी नहीं हो सकता है। अर्द्ध रेगिस्तानी भागों में केवल जानवर पालने का काम होता है। अधिकतर लोग भेड़ बकरी, ऊँट और गधे पालते हैं। भूमध्यसागर के तटीय मैदान और कुछ अन्य उपजाऊ भागों में खेती का काम होता है। उन्नत खेती (फार्म) करने का अधिकतर श्रेय नये आये हुए यहूदियों को है। इन्होंने दलदलों को सुखाया और सूखे भागों को सींच कर हरा भरा किया। जहाँ वीरान ज़मीन थी वहाँ खाद, सिंचाई और अच्छे बीजों का उपयोग करके लहलहाते हुए खेत और बगीचे खड़े कर दिये। नारंगी के बगीचे अधिकतर तटीय मैदान में हैं। पेलेस्टाइन से बाहर जाने वाली चीज़ों में नारंगी का प्रधान स्थान है। इस देश की निर्यात में ८० प्रति सैकड़ा नारंगी रहती है। कुछ भागों में अंगूर भी उगाये जाने लगे हैं।

पेलेस्टाइन के छोटे देश में लगभग ४०० मील लम्बी पक्की सड़कें और ४४० मील लम्बी दूसरी सड़कें हैं। इन सड़कों से १७७ गाँवों का काम चलता है। कुछ सड़कें बहुत सुन्दर बना ली गई हैं। इनमें मोटर

देश दर्शन



८—कुछ यहूदी अरबों से लड़ते हैं कुछ मच्छड़ों से लड़ते हैं। पेलेस्टाइन के अधिकतर भाग ऊँचे और स्वास्थ्यवर्द्धक हैं। लेकिन जार्डन-घाटी और तट के पास वाले कुछ दलदली भाग मच्छड़ों के अड्डे हैं। वहां मलेरिया का प्रकोप है। इस लिये मच्छड़ों को नष्ट करने के लिये वे बंधे पानी में दवाई छोड़ते हैं। अरबों के अचानक हमलों से बचने के लिये एक आदमी बन्दूक लेकर पहरा देता है।



१०—क़िलेबन्द यहूदी खेत—यहूदी उपनिवेशों को किस प्रकार अपने खेतों को अरबी हमलों से बचाना पड़ता है इसका कुछ पता इस चित्र से लग जाता है। एक बड़े खेत के बीच में किसान अपना घर बनाता है। घर के बीच में एक बड़ा आंगन होता है। इसी के चारों ओर किसान, भुसौरी, मुर्गीघर, खेतो के औज़ार रखने का घर, बुखारी और अपना घर फौजी बारीकों की तरह बनाता है। इन सब के चारों ओर दुहरे तख़्तों की चारदीवारी बनी होती है। तख़्तों के बीच में बालू कंकड़ और दूसरी चीज़ें भरी रहती हैं, जिससे गोली पार न कर सके। खेत कांटे दार तारों से घिरा होता है। घर के आंगन में एक ऊंचा बुर्ज होता है इसकी चोटी पर बैठकर एक मनुष्य रात भर पहरा देता है। पास ही गैस की तेज़ रोशनी होती है जिससे दूर का दिखाई देता है। खतरे के समय रोशनी से पास वाले दूसरे यहूदी खेत के लिये सिगनल भी किया जाता है।

और दूसरी गाड़ियाँ चलती हैं। १६१४ में पेलेस्टाइन देश में केवल एक मोटरकार था। इस समय यहाँ लगभग ३००० मोटरकार हैं। लगभग १००० मोटरकार अकेले यरूशलम नगर में हैं।

एक फौजी रेलवे साइनाई प्रायद्वीप के आरपार मिस्र देश से पेलेस्टाइन को आती है। हैफ़ा से इजिप्ट और सिरिया को रेलगाड़ियाँ छूटा करती हैं। जाफा से यरूशलम को और भी अधिक रेलगाड़ियाँ आती जाती रहती हैं। टेलीफोन और टेलीग्राफ लाइनों की भरमार है। इम्पीरियल एअरवेज़ का प्रधान हवाई स्टेशन गाज़ा नगर के पास है।

ईसाई

पेलेस्टाइन के छोटे देश (जिसका क्षेत्रफल केवल १०,००० वर्ग मील है) में १४ लाख मनुष्य रहते हैं। बड़ी लड़ाई के पहले यहां इतनी जन-संख्या न थी। बड़ी लड़ाई के बाद दूसरे देशों में बसे हुये हज़ारों यहूदी लोग संगठित रूप से यहां बसने के लिये आने लगे। इस समय बढ़ते बढ़ते उनकी जन संख्या ४ लाख हो गई है। शेष १० लाख में ६ लाख मुसलमान और १ लाख ईसाई हैं। तुर्की साम्राज्य के समय यहां ईसाइयों के कुछ मठ थे। कुछ ईसाई व्यापार में लगे थे। १८२३ ई० में पहले पहल प्राटेस्टेन्ट मिशन यरूशलम में स्थापित हुआ। अपने बनाये हुये ईसाइयों की सहायता के लिये इन्होंने जेतून की लकड़ी की बनी हुई चीज़ों का व्यापार चलाया। रूस, स्वेडन अमरीका आदि सभी देशों के थोड़े से पादरी यहां रहते हैं।

यहूदियों की बढ़ती हुई आबादी के आ जाने से पेलेस्टाइन में यहूदी-अरबी दंगों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है। यहूदी लोग अधिक शिक्षित, धनी और कारीगर होते हैं पेलेस्टाइन के अधिकतर कारबार यहूदियों के हाथ में हैं। नये ढङ्ग के बड़े बड़े खेत (फार्म) और



४—यहूदी पुजारी संकट की सूचना देने के लिये मेंढ़े (भेड़) के सींग को बजाते रहे हैं। पुराने समय में जब जेरिको नगर पतन हुआ तब पुजारी ने यही मेष-श्रृङ्ग बजाया। हाल में तेल-अवीव के झगड़ों में भी यही सींग बजा।

सन्तरों के अधिकतर बगीचे भी यहूदियों के अधिकार में हैं। बड़ी लड़ाई के पहले पेलेस्टाइन में कारबार का प्रायः अभाव था। नाबुलस में साबुन बनाने और तेल पेरने के कुछ कारखाने थे। शराब आदि के कुछ कार-

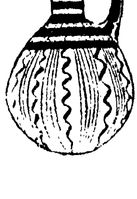


६—मरा सागर के खारे पानी से पोटाश निकाला जा रहा है। नमक से पैरों को बचाने के लिये काम करने वाले जूते पहने रहते हैं।

खाने एक दो स्थानों में और थे। आजकल सीमेंट, साबुन, लकड़ी का सामान, चाकलेट मिठाई, दियासलाई,

सिलीकेट की ईंट, वनस्पति घी, आटा पीसने, नमक बनाने आदि के कई कारखाने यहूदियों ने खोल दिये हैं। ऊपरी जार्डन घाटी में बिजली तयार की जाती है। तेल अबीब, हैफा और तबरिया आदि स्थानों में भी बिजली तयार की जाती है। पेलेस्टाइन की एक कम्पनी मरासागर से पोटाश निकालने का काम कर रही है।

अरबी लोग अधिकतर ढोर पालने और खेती के काम में लगे हुये हैं। कुछ अरबी लोग शहर और कस्बों में बसे हुए हैं। कुछ घुमक्कड़ जीवन पसन्द करते हैं और अपने डेरों को कुछ ही समय के लिये एक स्थान पर गाड़ते हैं।



७

संक्षिप्त इतिहास

पेलेस्टाइन देश छोटा होने पर भी इतने भागों में बटा हुआ है कि यह कभी एक राष्ट्र नहीं हुआ। न

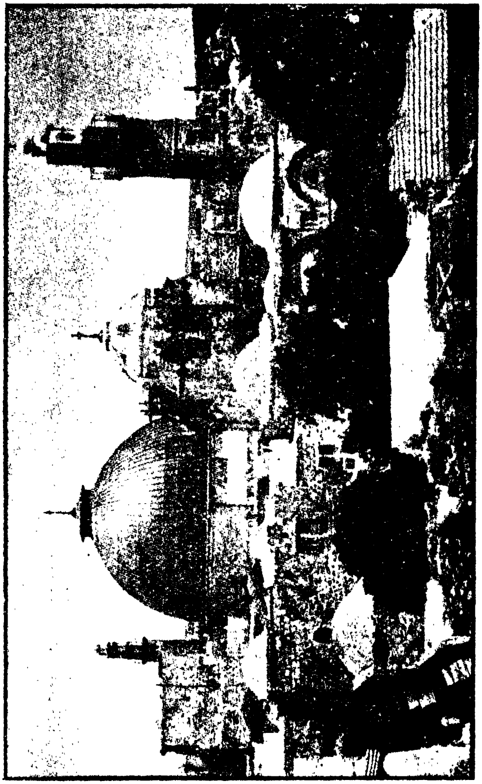


८—प्राचीन यूनानी और एमेज़न की लड़ाई (यरूशलम के पैलेस्टाइन म्यूज़ियम से)

भविष्य में इसके एक राष्ट्र होने की सम्भावना है।

देश दर्शन

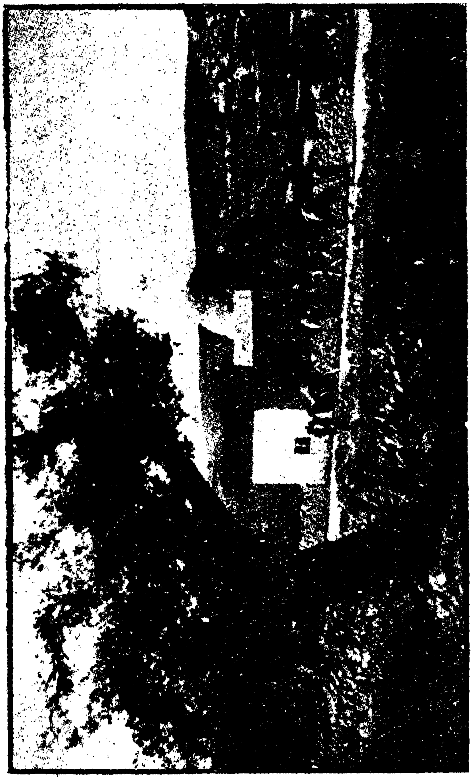
इसके समुद्रतट के पास पास पुराने समय में भी एक व्यापार मार्ग था। यहां दूर दूर के व्यापारी आते थे।



८—यरुशलम के होलीसेपलकर का एक दृश्य

समुद्री डाकू भी इस मार्ग से भली भांति परिचित थे।

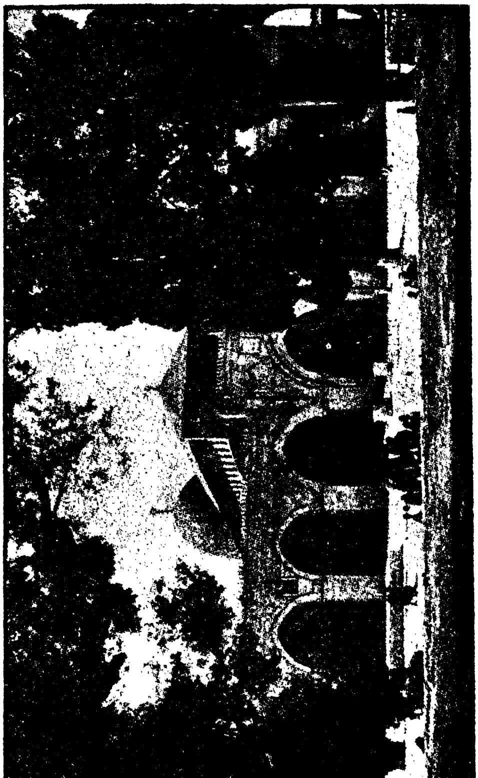
इस ओर कई बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुईं। गाज़ा बन्दरगाह से एक सड़क नील के डेल्टा को जाती थी। अरबी



१०—बैतलहम नगर के निरक राचेल का मकबरा

काफले भी यहां आया करते थे। इस प्रकार पैलेस्टाइन

एक ओर जार्डन नदी के पूर्व बेबिलान और उत्तर में सिरिया से जुड़ा हुआ था। मेसोपोटामिया, असीरिया,



११—यरूशलम-अल् अक्सा की मस्जिद

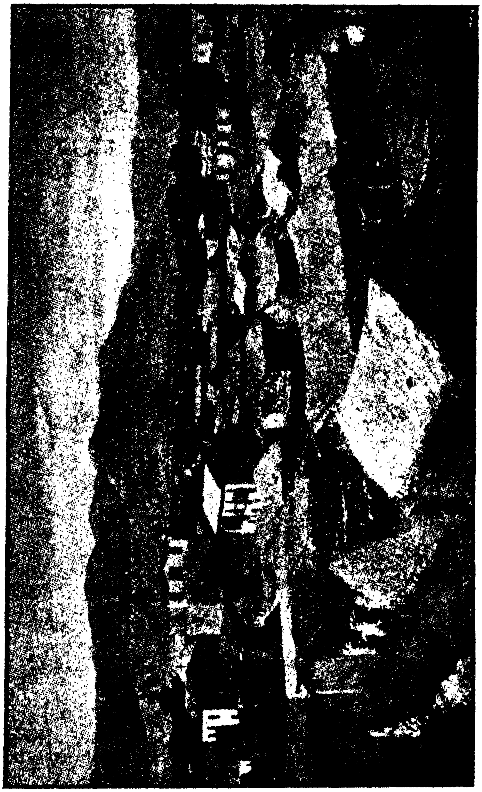
आर्मेनिया, अरब, मिस्र और लघुएशिया के द्वार पर

स्थित होने के कारण यहां कई सभ्यताओं का असर पड़ा।

गज़र के पास एक कब्र से पता चला है कि इतिहास के पूर्व यहां छोटे कद भारी सिर और गठीले जिस्म के लोग रहते थे। वे गुफाओं और छोटे झोपड़ों में अपना घर बनाते थे। वे भेड़, बकरी, गाय और सुअर पालते थे। इनकी हड्डियों से वे तरह तरह के औज़ार बनाते थे। इसके बाद यहां प्राचीन मिस्रियों का राज्य हुआ। ये प्राचीन मिस्री लोग एशिया के ही निवासी थे।

इसके बाद पेलेस्टाइन में अमरना युग आरम्भ हुआ। इन राजाओं के समय में यहां छोटे छोटे स्वाधीन नगर बने। पर इसी समय यहां गृह-कलह आरम्भ हुई। भीतरी भाग के हबीरू लोगों और तटीय के लोगों में लड़ाई छिड़ गई। कुछ लोगों ने मिस्र देश से सहायता मांगी। यहां कभी मिस्र और कभी असीरिया का प्रभुत्व रहा। जब पड़ोस के बड़े साम्राज्यों के हमलों से कुछ छुटकारा हुआ तब यहां हीब्रू राज्य स्थापित हुआ। छोटे छोटे राजा मिल कर एक हो गये। हीब्रू लोग यहवा (देवता) की पूजा करते थे। यहाँ के इस्रायली लोगों ने तटीय

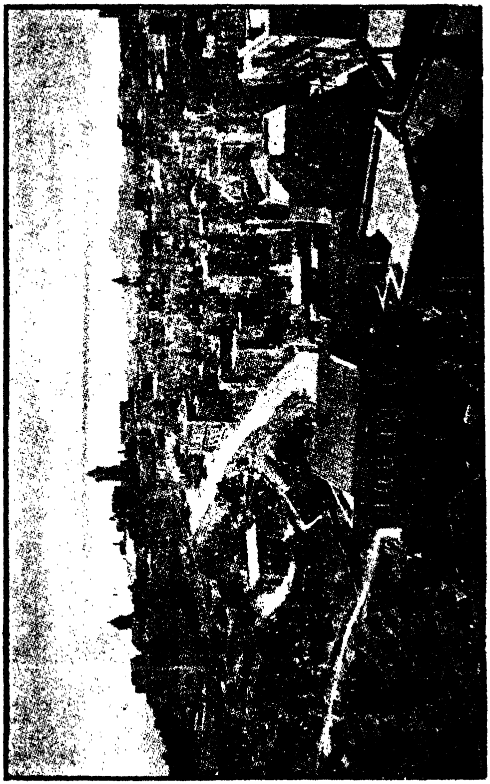
प्रदेश (फिलिस्तिया और फोनेशिया), अदोम, अमोन, मोआब आदि भीतरी भागों से मिला दिया ।



१२—जेरिको और क्वाजमाईश पर्वत का एक दृश्य

लेकिन धीरे धीरे भेद बढ़ने लगा और पेलेस्टाइन

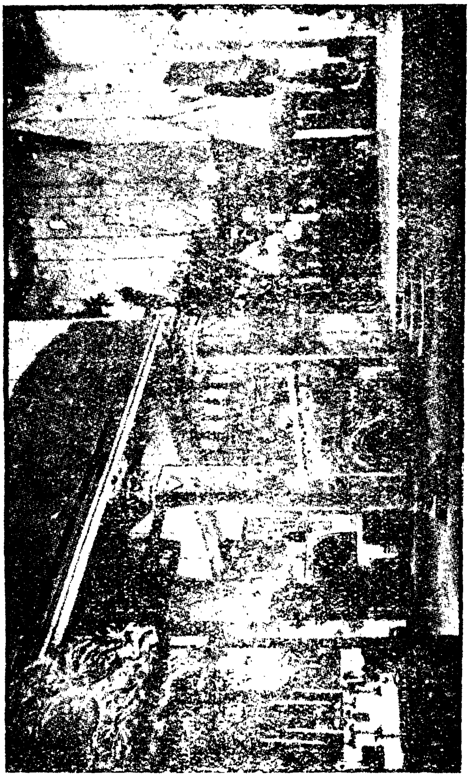
दो भागों में बँट गया। उत्तर में इस्रायल और दक्षिण में जूडा का राज्य हो गया। मिस्र देश के हमले फिर होने



१२—यीशु की जन्मभूमि बेतलहम का एक दृश्य

लगे। लेकिन पश्चिमी एशिया में असीरिया का साम्राज्य

बहुत तेज़ी से बढ़ गया। असीरिया का सामना करने के लिये यहां हिटायट और दूसरे छोटे छोटे राज्यों का एक

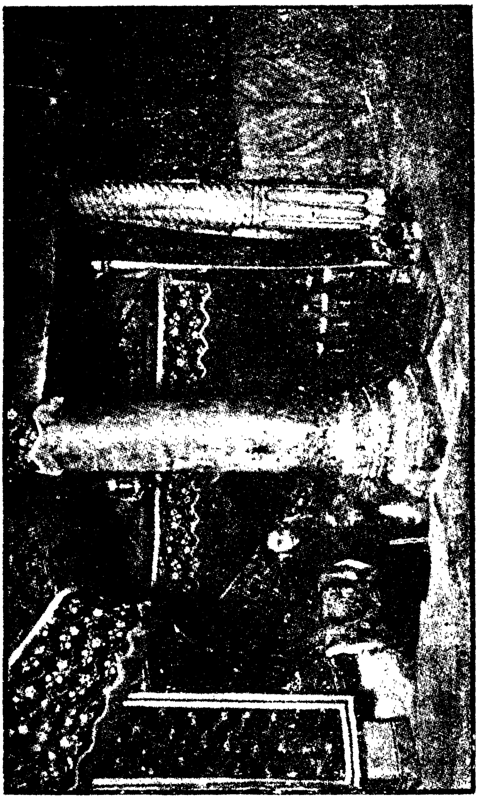


१४—बेतलहम में नेटिविटी के गिरजाघर का भीतरी दृश्य

संघ बना। यह संघ कुछ ही दिन चला और असीरिया

का यहां प्रभुत्व हो गया। आगे चल कर मिस्र देश फिर प्रबल हो गया और असीरिया में कमजोरी आ गई। मिस्र का सहारा पाकर जूडा में विद्रोह होने लगा। लेकिन बेबिलान में मिस्र देश का सब से बड़ा शत्रु खड़ा हो गया। बेबिलान की जड़ जमने न पाई कि यहाँ फारस (ईरान) के राजा का अधिकार हो गया। बेबिलान के पतन और ईरान के उत्थान से पेलेस्टाइन के लोगों को बड़ी खुशी हुई। ईरानी साम्राज्य के क्षीण होने पर ईसा से पूर्व सन् ३३२ में सिकन्दर महान यहां आया। सात महीने के घेरे के बाद उसने गाज़ा नगर जीत लिया। लेकिन यहूदियों के धर्म में उसने किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं किया। इसके बाद वह मिस्र देश पर चढ़ाई करने चला गया। सिकन्दर के मरने पर उसका राज्य छिन्न भिन्न हो गया। पेलेस्टाइन का राज्य सिकन्दर के एक सैनिक के लड़के टालेमी के हाथ आया। टालेमी राजा सख्त होने पर भी सहनशील थे। इन राजाओं ने न केवल पेलेस्टाइन वरन् मिस्र देश पर राज्य किया। इनके समय में इस ओर यूनानी सभ्यता फैली और जगह जगह पर यूनानी टोलियां बसीं। ईसा

से पूर्व तीसरी शताब्दी में सेल्यूसिड ने अपने को इस भाग का मालिक बनाने की कोशिश की। इन्होंने कई



१५—बैतलहम-चर्च जहां यीशु का जन्म हुआ

छोटे छोटे यूनानी नगर बसाये। लेकिन जब यूनानियों

ने ज़्यूस (Zeus या बृहस्पति) देव के लिये पेलेस्टाइन के विशाल मन्दिर में वेदी बनवाई तो यहवा के उपासक यहूदी लोग बिगड़ खड़े हुए।

यूनान कमज़ोर होने लगा। रोम में नई शक्ति का संचार हुआ। रोम के मन्त्रियों (सीनेटरों) की सहायता से हेरड (सूबेदारों ने) अपने को पेलेस्टाइन का राजा बना लिया। कुछ ही समय में पेलेस्टाइन में रोमन राज्य स्थापित हुआ। विद्रोह होने पर यरूशलम नष्ट कर डाला गया और यहूदी लोग छिन्न भिन्न कर दिये गये।

रोमन लोगों के शासन काल में ही ईसाई मत के जन्मदाता यीशु का यहां जन्म हुआ। अधिकतर यहूदी उन्हें नहीं मानते थे। अन्त में इन्हें शूली पर लटका दिया गया। इनके मरने पर इनका मत तेज़ी से बढ़ा। रोमन लोग भी ईसाई हो गये।

इस्लाम धर्म के फैलाने वाले हज़रत मुहम्मद ने आपस में लड़ने वाले अरबी कबीलों को एक कर दिया। उनके मरने पर इस्लाम धर्म और भी तेज़ी से बढ़ा। अरब देश के बाहर वाले भाग भी इस्लामी झंडे के नीचे आने लगे। सिरिया और पेलेस्टाइन में इस्लामी राज्य

हो गया। यरूशलम और ईसाइयों के दूसरे पवित्र स्थान मुसलमानों के अधिकार में आगये। इनको छुड़ाने के लिये योरुप के ईसाइयों ने कई सदियों तक क्रूसेडर नाम की धार्मिक लड़ाइयां लड़ीं। इससे योरुप के ईसाइयों में जागृति अवश्य फैली। पर पेलेस्टाइन में उन्हें कोई विशेष सफलता न मिली। अन्त में यहां तुर्कों का राज्य स्थापित हुआ और बड़ी लड़ाई के समाप्त होने तक तुर्कों का ही राज्य यहां बना रहा। बड़ी लड़ाई में टर्की की हार से यहां लीग (राष्ट्र-संघ) की ओर से ब्रिटिश शासन स्थापित हुआ। इस समय भी यहां ब्रिटेन का ही शासन है।



१६



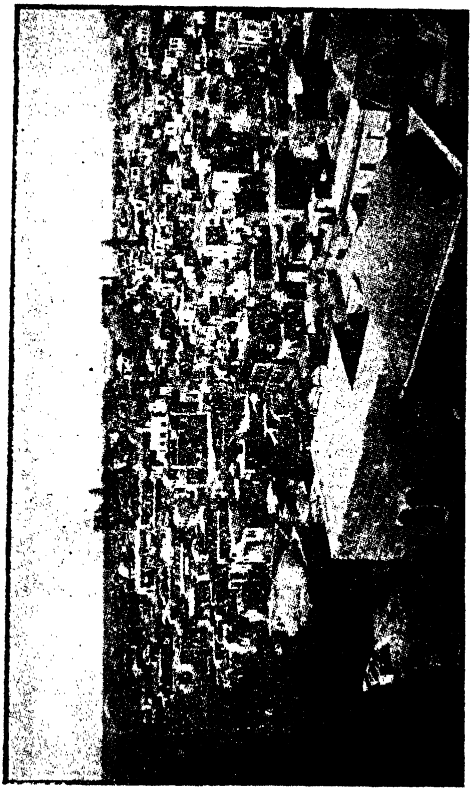
पेलेस्टाइन और बड़ी लड़ाई

१९१४ से १९१८ तक स्वेज़ नहर से लेकर अलप्पो तक ५०० मील से ऊपर की दूरी में अँग्रेज़ों और तुर्कों का एक लम्बा युद्ध क्षेत्र बन गया। एशिया और अफ्रीका के बीच में प्राचीन समय से यही मार्ग लड़ाई और व्यापार के काम आता रहा है। इस ५०० मील लम्बे स्थल-मार्ग में साइनाई का विकराल रेगिस्तान, पेलेस्टाइन का उपजाऊ मैदान, जुडिया के ऊँचे पहाड़, जार्डन की गहरी घाटी, सिरिया के पठार आदि तरह तरह के दृश्य मिलते हैं। कहीं ज़मीन एकदम निकम्मी है। कहीं यह अत्यन्त उपजाऊ है। प्रदेश के अनुसार लड़ाई भी कई ढंग से हुई। रेगिस्तान और मैदान में बैटरी से काम लिया गया। ढालू घाटियों में सिपाहियों से मुठभेड़ हुई।

ब्रिटेन का मुख्य उद्देश्य यह था कि स्वेज़ नहर सुरक्षित रहे। जब टर्की ने जर्मनी का साथ दिया तो यह स्पष्ट था कि दक्षिणी पेलेस्टाइन से तुर्क लोग स्वेज़ नहर और मिस्र देश पर हमला करेंगे। स्वेज़ और

पेलेस्टाइन के बीच में १०० मील निर्जल रेगिस्तान पड़ता है। इसको पार करने के लिये तीन मार्ग हैं। इनमें समुद्र तट के पासवाला मार्ग सबसे अधिक सुगम है। १६१५ के फर्वरी महीने में बीचवाले मार्ग से (जो इस्माइलिया के पास स्वेज़ नहर को पार करता है।) लगभग १५००० तुर्की सिपाही आगये। स्वेज़ की रक्षा के लिये हिन्दुस्तानी फौज पहले ही से तैयार थी। दोनों फौजों के बीच में नहर थी। जब तुर्कों की एक टुकड़ी ने नावद्वारा नहर को पार करने की कोशिश की तो यह नष्ट कर दी गई। लेकिन इस लड़ाई से यह फल निकला कि नहर की रक्षा इस किनारे से ठीक ठीक नहीं की जा सकती। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के घुड़सवारों और ऊँटों के रिसालों की सहायता से आगे बढ़ने और पेलेस्टाइन को जीतने का निश्चय किया गया। साइनाई प्रायद्वीप को पार करने के लिये स्वेज़ नहर के किनारे पर स्थित कन्तारा नगर से एक फौजी रेल निकाली गई। तुर्कों ने पीछे हट कर गाज़ा और बीरशबा में पेलेस्टाइन की रक्षा करने के लिये पड़ाव डाला। गाज़ा और बीरशबा एक दूसरे से २५ मील की दूरी पर बसे हैं। दक्षिण से आने

वालों के लिये सबसे पहले पेलेस्टाइन के प्राकृतिक दरवाज़े पड़ते हैं। गाज़ा तटीय स्थल मार्ग की



१७—यरुशलम का एक दृश्य

(दक्षिणी) कुंजी है। बीरशबा पहाड़ी रेगिस्तान के

उस भाग में स्थित है जहाँ पर्याप्त मात्रा में पानी मिल सकता है।

गाज़ा की किलेबन्दी बड़ी मज़बूत थी। पहाड़ी के पास रामबाँस थे, गाज़ा की चढ़ाई में ७००० ब्रिटिश सिपाही काम आये। यहाँ पहले पहल टैंक काम में लाये गये। लेकिन रेतीली ज़मीन में वे ठीक ठीक काम न दे सके! कुछ को तुर्की तोपों ने बिगाड़ दिया। इस हार से अँग्रेज़ों की भारी हानि हुई। लेकिन इतनी दूर बढ़ आने से मिस्र देश और स्वेज़ नहर की पूरी रक्षा हो गई। इस के साथ ही यहाँ से स्वेज़ नहर तक रेगिस्तानी रेलवे बनाने में भी सहायता मिली। दूसरी चढ़ाई के कुछ पहले तुर्कों से बग़दाद छिन चुका था। वे अलप्पो से फौज भेज कर फिर इसे छीन लेना चाहते थे। गाज़ा पर दूसरी बार चढ़ाई करने का यही सबसे अच्छा अवसर था।

गाज़ा की क़िलेबन्दी मज़बूत थी ही, उनकी फौज का सेन्टर (केन्द्र) भी प्रबल था। केवल उनका वाम (बायां) पक्ष जो बीरशबा से ७ मील पश्चिम की ओर था कुछ कमज़ोर था। अतः बीरशबा को पहले छीनने

का निश्चय किया गया। इसमें अँग्रेजी रिसाले से बड़ी मदद मिली। तुर्की फौजों में रिसाले की कमी थी।



१८—यरूशलम— जाफा दरवाज़ा

सामान भी कठिनाई से आता था। हैदर पाशा (कुस्तु-

न्तुनिया के सामनेवाला एशियायी बन्दर) पेलेस्टाइन के दक्षिणी युद्ध-क्षेत्र से १२७५ मील दूर था। इस फासले में केवल एक रेल थी। इसकी भी बड़ी छोटी कई लाइनें थीं। कई सुरंगों में वह अपूर्ण थी। इस प्रकार सामान आने में बड़ी देर लगती थी। जर्मन और तुर्की अफसरों में भी कुछ वैमनस्य था। अंग्रेज़ों को रेगिस्तान में केवल ५०० मील लम्बी रेल बनानी पड़ी थी। वह भी कहीं कहीं दुहरी कर ली गई थी। इस तरह इस बार अंग्रेज़ी फौज अधिक सुसज्जित थी। अंग्रेज़ी सेनापति जनरल एलेनबी ने लड़ाई में बड़ी होशियारी दिखलाई। तुर्कों को ऐसा भास होने लगा कि अंग्रेज़ों का लक्ष्य गाज़ा जीतना है। अतः भ्रम में पड़ जाने के कारण वे बीरशबा को न बचा सके। बीरशबा की जीत से पेलेस्टाइन का द्वार खुल गया। कुछ ही दिनों में जाफा और जंक्शन स्टेशन (जहाँ से यरूशलम को रेल जाती है) अंग्रेज़ों के हाथ आये। लेकिन अन्तिम लड़ाई यरूशलम की थी। १९१७ के दिसम्बर महीने में यरूशलम पर चढ़ाई करने की तयारी की गई। तुर्कों के हार से जगह जगह पर अरबों ने विद्रोह का झंडा खड़ा किया। इससे तुर्कों की

सैनिक शक्ति और भी तेज़ी से क्षीण हो गई। १९१८ में इस ओर विकट समस्या थी। जर्मन फौजें पश्चिमी योरुप के रणक्षेत्र पर दबाव डाल रही थीं। अतः कुछ लोगों का विचार था कि सारी शक्ति उसी ओर लगाई जावे। दूसरे सैनिक का कहना था कि जर्मनी के कमज़ोर मित्रों को नष्ट करके जर्मनी को हथियार डालने के लिये विवश किया जावे।

अतः कुछ ही समय में हैफा, नाज़रथ, यरूशलम आदि पेलेस्टाइन के सारे शहर जीत लिये गये, और पेलेस्टाइन पर अंग्रेज़ों का अधिकार हो गया।



बड़ी लड़ाई के बाद की घटनायें

बड़ी लड़ाई के पहले पेलेस्टाइन टर्की का एक सूबा था। यहाँ का शासन एक तुर्की सूबेदार के हाथ में था। १६११-१२ में इटली युद्ध और १६१२-१३ में बलकान युद्ध में टर्की को बड़ी हानि उठानी पड़ी थी। अतः टर्की की आर्थिक दशा बड़ी शोचनीय हो गई। टर्की इस योग्य न था कि वह अपने सूबे (पेलेस्टाइन) को उन्नत कर सके। बड़ी लड़ाई में पेलेस्टाइन की दशा और भी अधिक बिगड़ गई थी। उपजाऊ खेत बिना जुते पड़े थे। नारंगियों के बहुत से बगीचे नष्ट हो गये थे। लोगों के पास खाने के लिये भोजन की कमी थी।

१६१७ के दिसम्बर में जब ब्रिटिश जनरल ने यरूशलम में प्रवेश किया तो लोगों को भोजन और दूसरी चीज़ों की सुविधा हो गई। साइनाई प्रायःद्वीप को पार करने वाली फौजी रेलवे व्यापारियों के लिये खुल गई। वे इस रेलवे द्वारा मिस्र देश से व्यापार कर सकते थे।

देश में पहले कुछ दिन फौजी शासन रहा। फिर



२०—तेल—अवीव का चौराहा। जहां पहले सुनसान रेगिस्तान था वहां कुछ वर्षों में आलीशान यहूदी नगर तैयार हो गया है।

यहाँ साधारण शासन हुआ और कृषि, नारंगी के बगीचों आदि की उन्नति की ओर ध्यान दिया गया।



२१—नाबुलस की एक अरबी महिला अपने बच्चे को टोकरी में सुला कर उसे अपने सिर पर रख कर काम पर जा रही है।

धार्मिक मामलों में यहूदियों और अरबी मुसलमानों को पूरी स्वाधीनता घोषित की गई। वक़्फ या धर्म्मादा का

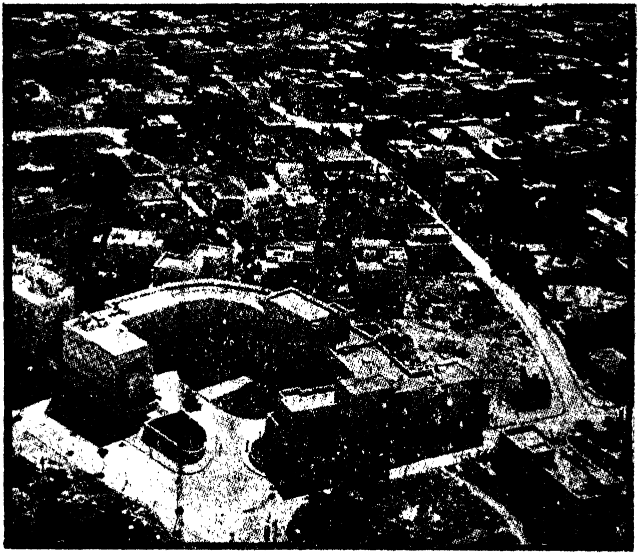


२२—ब्रिटिश सिपाही यरूशलम के जाफा दरवाज़े के पास अरबों की तलाशी ले रहे हैं। यहूदी-अरबी झगड़ों के कारण बाहरी अरबी तलाशी देने के बाद ही शहर में घुस पाते हैं।

प्रबन्ध करने के लिये एक मुसलमानी विभाग खोल दिया गया।

लेकिन बड़ी लड़ाई में सफलता प्राप्त करने के लिये अरबी और यहूदी दोनों ही को बड़ी बड़ी आशायें दिलाई गई थीं। इधर अरबों को पूर्ण स्वाधीनता का वचन दिया गया था। उधर यहूदियों के लिये पेलेस्टाइन को राष्ट्रीय निवास (National home) बनाने की बात कही गई थी। ब्रिटिश सरकार की इसी घोषणा के आधार पर संसार के दूसरे देशों में बसे हुए यहूदी लोग पेलेस्टाइन को उपनिवेश बनाने के लिये हज़ारों की संख्या में आने लगे। दूसरे भागों (जैसे इराक़, ट्रान्स जार्डन) के अरबी लोगों को कुछ स्वाधीनता मिल भी गई। लेकिन पेलेस्टाइन के अरबी लोग निरंकुश ब्रिटिश शासन से घबराने लगे। यहूदियों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर वे और भी भयभीत होने लगे। उन्हें सन्देह होने लगा कि शायद फूट फैलाने और अपनी जड़ जमाने के लिये ही ब्रिटिश साम्राज्यवादी यहूदियों को पेलेस्टाइन में बसा रहे हैं। वे यहूदियों और अँग्रेज़ों के कट्टर दुश्मन हो गये। १९३६ से यह दुश्मनी और भी अधिक बढ़ गई। अप्रैल मास में हड़ताल आरम्भ हुई। यह हड़ताल अक्टूबर महीने तक चली। इस बीच में सशस्त्र अरबी लोगों ने यहूदियों,

ब्रिटिश सैनिकों और पुलिस पर हमला किया। यहूदियों की फसलें जला डाली गईं। तार काट डाले गये। सड़कों



२३—मुसलमानों का विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद यरुशलम की पाक चट्टान से ही स्वर्ग के लिये चढ़े थे।

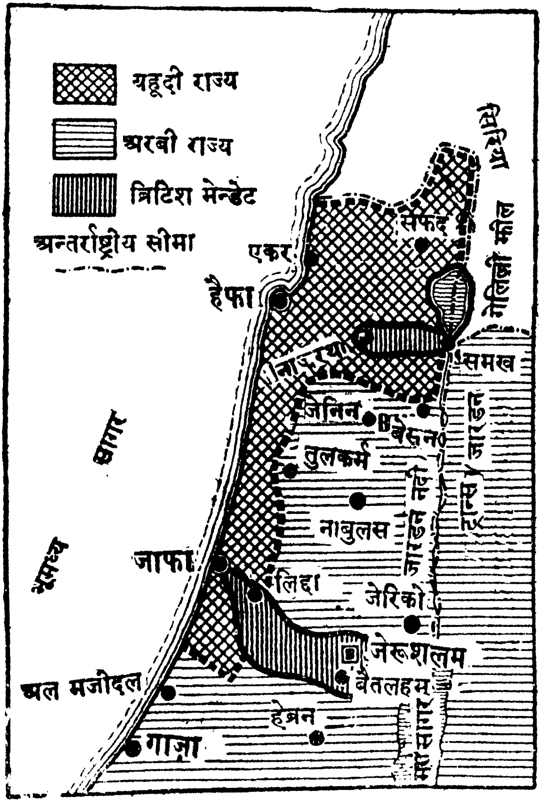
पर कहीं गढ़े खोद दिये गये। कहीं पत्थर रख दिये गये। रेलवे की पटरियाँ जगह जगह पर उखाड़ डाली गईं। मिट्टी के तेल की पाइप लाइन भी तोड़ कर जला

दी गई। लगभग ३२ ब्रिटिश सैनिक, ८२ यहूदी और १००० अरबी जान से मारे गये।

इन उपद्रवों को शान्त करने के लिये एक शाही कमीशन नियुक्त किया गया। इस कमीशन को पता लग गया कि अरबी लोग आज़ादी चाहते हैं। अरबियों की धारणा है कि यहूदियों के बढ़ते बढ़ते यदि यहूदी बहु संख्या और अरबी अल्प संख्या में हो गये तो सम्भवतः पेलेस्टाइन को स्वाधीनता मिल जायगी। लेकिन इस स्वाधीनता से अरबी लोगों को कोई लाभ न होगा। इसलिये वे यहूदियों के उपनिवेशों के घोर विरोधी हैं।

आपस के इन झगड़ों को सुलझाने के लिये कमीशन ने पेलेस्टाइन को तीन भागों में बाँट दिया। तटीय प्रदेश और उत्तरी भाग यहूदियों के लिये, भीतरी भाग और दक्षिणी तट अरबी लोगों के लिये छोड़ दिया गया। बीच वाले प्रदेश, यरूशलम शहर और जाफा बन्दरगाह पर ब्रिटिश शासन यथावत रक्खा गया। अरबी लोगों ने पेलेस्टाइन-विच्छेद का घोर विरोध किया। गड़बड़ी बढ़ती ही गई। पेलेस्टाइन में १९३९ से लगातार अशान्ति छा गई। गेलिली और समरिया के पहाड़ी भागों से

सशस्त्र अरबी लोग भीषणता से यहूदी उपनिवेशों और



२४

राजभक्त अरबों पर हमला करने लगे। कमीशन के

सदस्यों को सशस्त्र सिपाहियों के साथ भ्रमण करना पड़ा। १६३८ के पहले छः महीनों में हथियारबन्द अरबी विद्रोहियों ने लगातार हमले किये। जुलाई में हमलों की भीषणता और अधिक हो गई। इस महीने हैफा और यरूशलम में दो ज़ोरदार बम्ब घने अरबी बाज़ार में फटे। एक बम्ब के फटने से ३६ अरबी मरे। इसके बदले में अरबों ने १६ यहूदियों की हत्या की। इनमें तबरियों के १० यहूदी बच्चे भी शामिल थे। पहाड़ी भागों में अरब लोग फ़ाजी ढंग से छोटे छोटे नगरों पर छापा मारने लगे। धन की कमी को दूर करने के लिये उन्होंने बैंकों, डाकघरों और चुंगीघरों को लूटा। नगरों में सुगमता से प्रवेश करने के लिये अरबी नेताओं ने शहरी लोगों को आदेश दिया कि वे तरबूश की जगह फलाही लोगों की तरह सिर पर कपड़ा बाँधें, उनकी इस आज्ञा का सब कहीं पालन किया गया।

सितम्बर महीने में अरबी विद्रोहियों ने बेतलहम पर अधिकार कर लिया। यहाँ पुलिस स्टेशन, डाकखाना, म्यूनीसिपेलिटी और कचहरी की इमारतें गिरा दी गईं। रमल्ला, बीरशबा और हब्रोन पर भी हमले किये गये।

लिद्दा से यरूशलम को रेल का आना जाना तीन महीने तक बन्द रहा। देहात की सड़कों पर सूर्यास्त और



२४——जाफा नगर में बाहर से आने वाले यहूदियों के उतरते समय अरबों ने दंगा मचाया। पुलिस ने दंगा करने वालों का पीछा किया। अरबों को मारने के लिये पुलिस के सिपाही हाथ में डंडा लिये हुए हैं। उनके डंडों से बचने के लिये पुलिस के सिपाही ढाल रखते हैं।

बहुत से स्थानों में कचहरी बन्द हो गई। लगान की वसूली असम्भव हो गई।

सूर्योदय के बीच में रात को निकलने की मनाई कर दी गई। कुछ विद्रोहियों ने यरूशलम पर भी चढ़ाई की। डर था कि देश की राजधानी यरूशलम भी कहीं उनके हाथ न आ जावें। लेकिन इसी बीच में ब्रिटिश फौज बढ़ा दी गई और ब्रिटिश-सरकार ने वर्तमान परिस्थिति में शासन की बागडोर अपने ही हाथ में रक्खी और शासन सुधार सम्बन्धी सभी योजनाओं को स्थगित रक्खा।

१६३८ के दिसम्बर महीने में कान्फरेन्स की घोषणा की गई। मिस्र, इराक़, सऊदी अरब, और ट्रान्स जार्डन के नेताओं ने पेलेस्टाइन की समस्या पर बहस करने के लिये लन्दन की कान्फरेन्स में शामिल होने का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। कान्फरेन्स में सम्मिलित होने के लिये मुफ़्ती को छोड़ कर पेलेस्टाइन के दूसरे विद्रोही नेता छोड़ दिये गये। लेकिन फिर भी कान्फरेन्स सफल न हुई और पेलेस्टाइन में पहले की तरह इस समय भी अशान्ति का राज्य है।

पेलेस्टाइन के धर्म

अल् इस्लाम—पेलेस्टाइन में इस्लाम धर्म के मानने वाले सबसे अधिक संख्या में हैं। इस्लाम धर्म का आरम्भ ६२८ ईस्वी से आरम्भ होता है जब हज़रत मुहम्मद् मक्का छोड़ कर मदीना को भाग गये थे। इस्लाम धर्म का मुख्य सिद्धान्त यह है कि अल्लाह केवल एक है और मुहम्मद उनके नबी हैं। पेलेस्टाइन के मुसलमान चार सम्प्रदायों में बटे हुए हैं। मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर ने दुनिया में ६ खास पैगम्बर या नबी भेजे। आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद् ये ६ मुख्य नबी हैं। मुसलमानों के अनुसार सबसे बड़े नबी हजरत मुहम्मद ही हैं। प्रत्येक नबी अपने समय में ईश्वर का कोई न कोई पैगाम पूरा करने आया था। उसके बाद उससे बड़ा नबी आया। इस प्रकार यहूदी लोग एक समय (मूसा के) में सच्चे धर्म को मानने वाले कहे जा सकते हैं। इसके बाद मुहम्मद को न मानने के कारण वे आज कल सच्चे मुसलमान नहीं कहे जा सकते हैं।

मुसलमानों को मूसा की किताब और इंजील की

सचाई पर सन्देह है। लेकिन वे क़ुरान को एकदम सच मानते हैं। उनके अनुसार बनने के समय से अब तक



२६—ताइरश नगर—कुमारी के झरने का एक दृश्य

क़ुरान में किसी तरह की तबदीली नहीं हुई है।



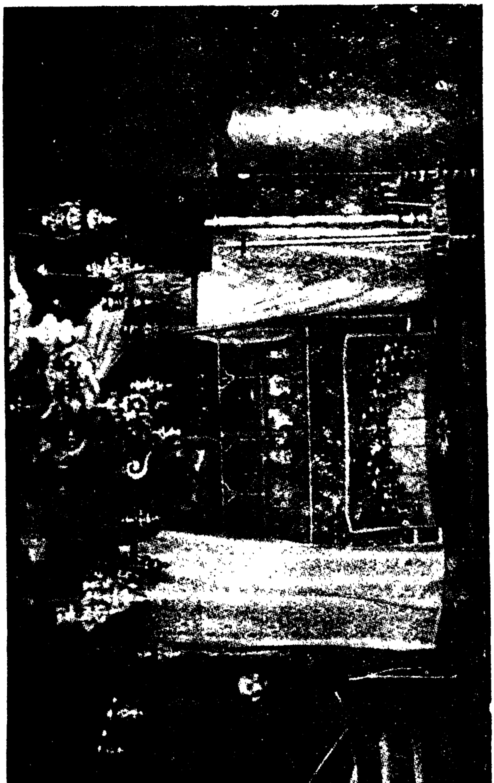
पैले-स्टाइन



मुसलमान आत्मा को अमर मानते हैं। स्वर्ग ईश्वर की कृपा (करम) से मिलता है।

मस्जिदों के सम्बन्ध में ग्रांड या बड़ा मुफ्ती सबसे बड़ा पदाधिकारी (ओहदेदार) होता है। वही दूसरे पदाधिकारियों को नियुक्त करता है। काजी न्यायाधीश का काम करता है। खतीब (खुतबा) शुक्रवार के दिन व्याख्यान देता है। मुअज़्ज़िन मीनार के ऊपर चढ़कर दीनदारों को प्रार्थना के लिये बुलाता है (अज़ान देता है)। नमाज़ (प्रार्थना), रोज़ा (उपवास), ज़बात (दान) और हज (तीर्थ यात्रा) मुसलमानों के चार प्रधान कर्तव्य हैं। सबसे बड़ा रोज़ा रमजान के महीने में होता है। नमाज़ के पहले हाथ पैर धोना और कुल्ला (वज़ू करना) करना पड़ता है। प्रार्थना के समय कपड़े भी पाक साफ होने चाहिये। ज़मीन पर बिछाने के लिये मसल्ला या जा नमाज चाहिये। मस्जिद में घुसते समय जूते दरवाज़े पर छोड़ देने पड़ते हैं। वहीं हौज़ में हाथ पैर धोने के लिये पानी रहता है। नमाज़ (प्रार्थना) पढ़ते समय मुसलमान लोग मक्का की ओर मुँह कर लेते हैं। शुक्रवार के दिन बड़ी प्रार्थना होती है। उसी दिन क़ुरान की कुछ

आयतें पढ़ी जाती हैं और खातिब व्याख्यान देता है।



२७—बैतलहम में नेटिविटी के गिरजा का दूसरा दृश्य

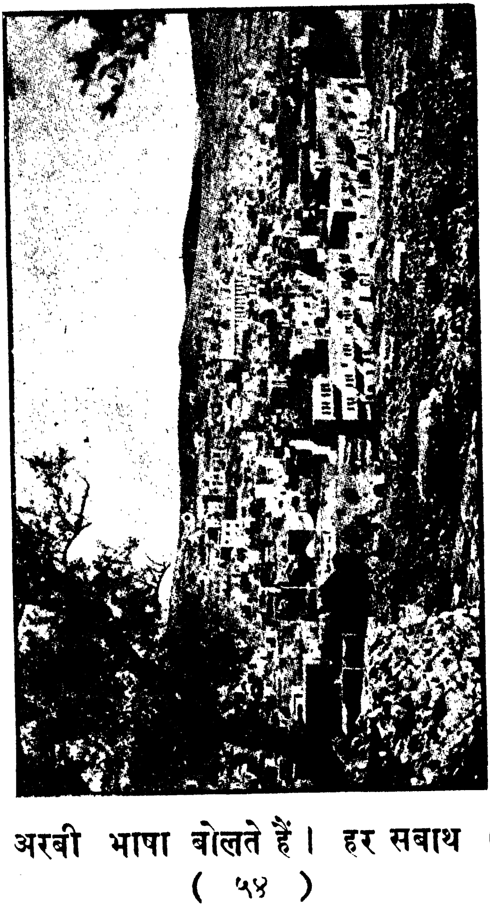
मुसलमानी वर्ष चन्द्र मास से गिना जाता है। उसमें

केवल ३५४ दिन होते हैं। इसलिये मुसलमानी त्योहारों का मौसम अक्सर बदलता रहता है।

मस्जिद बनवाना भी एक सवाब का काम है। पहली मस्जिद मदीना में बनवाई गई थी। इसको स्वयं हज़रत मुहम्मद ने बनवाया था। यह खजूरों के एक बगीचे में बनी थी। इसकी दीवारें कच्ची मिट्टी और ईंटों की बनी थीं। छत को साधने के लिये खजूर के खम्भे गाड़ लिये गये थे। छत खजूर की पत्तियों से छाई गई थी। इसमें तीन दरवाज़े थे। इसका एक भाग आश्रयहीन ग़रीबों के लिये छोड़ दिया गया था। पहली मस्जिद को मस्जिद अन् नबी या नबी की मस्जिद के नाम से पुकारते थे। पहली मस्जिद नष्ट हो गई और उसके स्थान पर दूसरी आलीशान मस्जिद बनी। फिर भी उसका पुराना नाम बना रहा। पेलेस्टाइन में यरूशलम की मस्जिद दुनिया की बड़ी मस्जिदों में गिनी जाती है।

यहूदी—पेलेस्टाइन के यहूदी दो सम्प्रदायों में बटे हुए हैं। स्पेन और पुर्चगाल से आये हुये यहूदी सेफरदीम कहलाते हैं। जर्मनी पोलैंड, रूस आदि अन्य भागों से आये हुए यहूदी अश्के नाज़ीम कहलाते हैं।

कुछ यहूदी पेरूशीम (फेरेसी) और कुछ चासिदीम (पाक) कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त, बग़दाद, अलप्पो आदि के



२८—यरूशलम-जैतून पर्वत (माउन्ट आफ आलिव्ज) का एक दृश्य

यहूदी अरबी भाषा बोलते हैं। हर सबाथ (आराम



के दिन) बड़े सिनेगाग (यहूदी मन्दिर) में विशेष प्रार्थना होती है और उपदेश दिये जाते हैं। शाम की प्रार्थना और तीसरे पहर के बीच में गीत (साम) पढ़े जाते हैं। हर सोमवार और बृहस्पतिवार को यहूदी (धार्मिक) व्यवस्था का कुछ भाग पढ़ा जाता है। इसका कारण यह है कि बृहस्पति के दिन यहूदियों के विश्वास के अनुसार मूसा नबी १० आदेश लेने के लिये साइनाई पर्वत पर गया था और सोमवार को लौटा था।

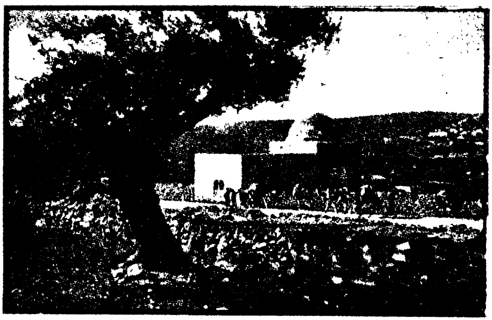
मुसलमानों और यहूदियों के अतिरिक्त यहाँ इसाइयों के सभी सम्प्रदाय माने जाते हैं। ईसा स्वयं यहूदी था और यहूदी घर में एक कुमारी (बिना व्याही) कन्या के पेट से पैदा हुआ था। ईसा ने लोगों को मूसा के उपदेशों को मानने से मना नहीं किया। लेकिन उसने अपने उपदेशों में कई नई बातें बतलाईं जो इसाइयों के अनुसार मूसा की व्यवस्था से अधिक उन्नत थीं। इनमें सर्मन आन दी माउंट (पर्वत पर प्राप्त किया हुआ उपदेश) सर्वप्रसिद्ध है। कहा जाता है कि उसने कई आश्चर्य काम किये। वह अपने को ईश्वर का बेटा बतलाता था। यहूदियों ने उसमें कोई विशेषता नहीं देखी। इस कारण

उसे अपने प्राचीन धर्म के विरुद्ध समझ कर उसे शूली दिलवा दी।

ईसा के कई (१२) चेले थे। इनका कहना है। कि ईसा तीसरे दिन कब्र से जी उठा और उठकर स्वर्ग में अपने बाप ईश्वर के पास चला गया। वास्तव में ईसाई धर्म का प्रचार ईसा के मरने के बाद उसके चेलों ने किया। इनमें सेन्ट पाल और पीटर बहुत प्रसिद्ध हैं। इन चेलों के उपदेशों और सन्देशों का संग्रह अलग अलग छोटी पुस्तकों में है। इन सबको न्यू टेस्टामेन्ट (इंजील) कहते हैं। इंजील के दो भाग हैं। पुराने (मूसा के समय तक के) भाग को ओल्ड (पुराना) टेस्टामेंट कहते हैं। ईसाई दोनों भागों को मानते हैं। लेकिन वे न्यू (नये) टेस्टामेन्ट पर अधिक जोर देते हैं। यहूदी केवल पुराने टेस्टामेन्ट को सच मानते हैं और नये टेस्टामेंट को गप्प समझते हैं। ईसाइयों का विश्वास है कि बिना ईसा पर विश्वास लाये मुक्ति नहीं मिल सकती। इसी लिये वे ईसा, ईश्वर और पवित्र आत्मा (होली गोस्ट) को मानते हैं। ईसाईयों के कई सम्प्रदाय हैं। इन सबके प्रतिनिधि पेलेस्टाइन में मिलते हैं।

प्राचीन नगर

यरूशलम नगर ३१'४६ उ० अक्षांश और ३५'१३ पूर्वी देशान्तर में चूने के पत्थर के एक वीरान पठार पर स्थित है। इस पठार का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। उत्तर की ओर पठार फिलिस्तीन के पहाड़ों से मिल जाता है। दक्षिण की ओर यह पठार दो मिलनेवाली



२६—बेतलहम का एक दृश्य

घाटियों के बीच में चला गया है। पश्चिम की ओर हिनोम की घाटी है जिसे आजकल वादी-अर-रबाब कहते हैं। पूर्व की ओर किद्रोन की घाटी है। इन दो घाटियों के मिलने के स्थान से वादी-अन्-नार या अग्नि-घाटी दक्षिण-पूर्व की ओर मरासागर की ओर ढालू

होती गई है। कहते हैं कि पहले यहां के मूर्तिपूजक राजा अग्नि की पूजा किया करते थे।

यरूशलम नगर वास्तव में चार पहाड़ियों के ऊपर बसा हुआ है। लेकिन पिछले ३००० वर्ष में यरूशलम नगर कई बार नष्ट हुआ। इसलिये इन पहाड़ियों को अलग करने वाली पहाड़ियां बहुत कुछ भर गईं।



३०—नाज़रथ में कुमारी का झरना। यह पेलेस्टाइन के मनोहर स्थानों में से एक है। यहीं ईसा मसीह पानी पीने आये थे।

ज़िओन पर्वत किद्रोन घाटी के ऊपर ५०० फुट ऊंचा उठा हुआ है। चारदीवारी के उत्तरी-पश्चिमी कोने के ऊपर से शहर का एक विहङ्गम दृश्य दिखाई देता है। वहीं से यहूदी विश्वविद्यालय का एक दृश्य दिखाई देता

है। शहर की चारदीवारी की औसत ऊँचाई लगभग ३८ फुट है। इस चारदीवारी का विषम आयताकार घेरा



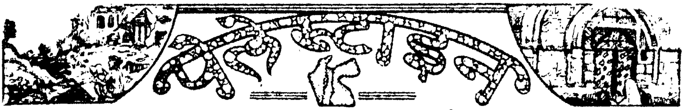
३१—यरूशलम—डेविड स्ट्रीट। इस सड़क पर बड़ी भीड़ रहती है।

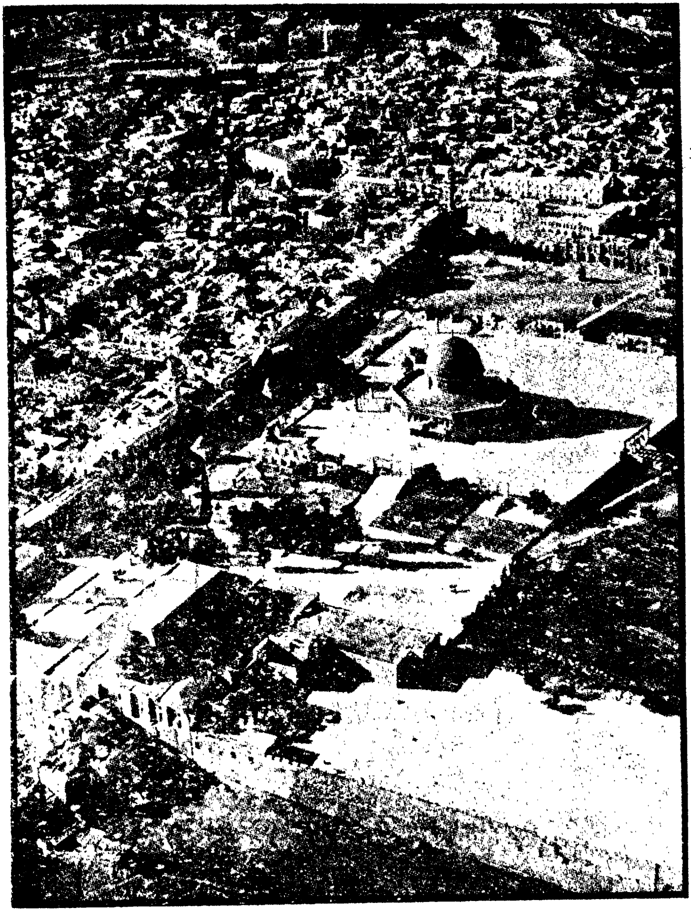
२ मील लम्बा है। एक शिलालेख से पता चला है कि १५४०-४१ में सुल्तान सुलेमान ने उन्हें फिर से बन-



३२—बैतलहम नगर का एक दृश्य

वाया था। आजकल की चारदीवारी में ३४ बुर्ज और





३३—नया यरूशलम चारदीवारी के बाहर बन रहा है ।

८ दरवाजे हैं। दमश्क-दरवाजे को अरबी लोग बाबुल उमूद (खम्भों का दरवाजा) भी कहते हैं। यहां से दमश्क और समरिया को रास्ता गया है। जाफा दरवाजा को बाबुल-खलील मित्रद्वार नाम से पुकारते हैं। कहा जाता है कि यरूशलम की पहली चारदीवार राजा दाऊद ने बनवाई थी। इसको सुलेमान ने सुधरवाया था।

जाफा-सड़क और दमश्क-सड़क शहर के पश्चिमी और उत्तरी भाग से आरम्भ होती हैं और शहर के बीच में एक दूसरे को काटती हैं। इन सड़कों ने शहर को चार भागों में बांट दिया है। शहर की प्रधान सड़क डेविड स्ट्रीट कहलाती है। चौड़ी सड़कों में सैकड़ों तंग गलियां मिली हुई हैं। इनमें ऊँट, गधे, भेड़ बकरियां और अरबी लोगों की भीड़ लगी रहती है।

यरूशलम नगर की जनसंख्या लगभग ९३,००० है। इसमें ५१,००० यहूदी, २०,००० मुसलमान, १९,००० ईसाई हैं। कुछ सूडानी मूर और दूसरे लोग हैं। मुसलमान लोग मक्का और मदीना की तरह यरूशलम को भी पाक मानते हैं। दूर दूर के मुसलमान यहां तीर्थ

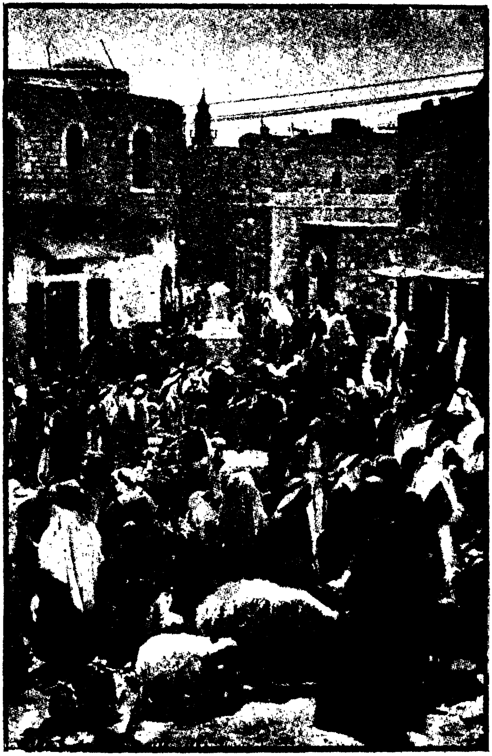
यात्रा करने आते हैं। हिन्दुस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, अफ्रीका, बुख़ारा आदि के यात्रियों के ठहरने के लिये तकिया-



३४—बैतलहम का बाज़ार

हिनूद आदि स्थान अलग अलग बने हुए हैं।

१५वीं सदी में स्पेन और पुर्चगाल से भगाये जाने के बाद अधिकतर यहूदी वहीं आकर बस गये।



२४—बैतलहम की एक सड़क का सुन्दर दृश्य

पेलेस्टाइन देश ईसा की जन्मभूमि होने से यरूशलम में संसार के प्रायः सभी सम्प्रदायों के ईसाई मिलते हैं। यहां गिरजाघरों की भरमार है। होली सेपल कर का गिरजाघर उस जगह बना है जहां ईसा को शूली दी गई थी। यह रोज खुलता है। यरूशलम के उत्थान और पतन के साथ यह कई बार बना और बिगड़ा। १८७६ में इसके गुम्बदों को फ्रांस और रूस के कारीगरों ने बनवाया था।

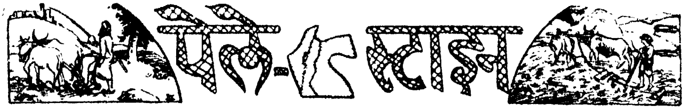
सेपलकर के पास ही कोप्ट लोगों का पुराना गिरजा है। कुछ ही दूर यहूदियों के मकबरे और कई गिरजे हैं। दक्षिण की ओर ओमर की मस्जिद है जो १४१७ ईस्वी में बनाई गई थी। यह सुन्दर मस्जिद मोरिया पर्वत पर बनी है। जिस स्थान पर यह मस्जिद बनी है। वह एक प्राचीन मन्दिर था। क्रूसेडर लोगों ने जब यरूशलम को जीता तो कुछ समय के लिये गिरजा घर बन गई। लेकिन सलादीन ने जीत कर इसे फिर मस्जिद बना लिया। कई खलीफाओं ने इस मस्जिद को बनाने और सजाने में अपार धन व्यय किया। मस्जिद के सामने ही ज़करिया का मकबरा है।

देश दर्शन

नाज़रथ नगर को अरबी में अन्-नसीरा कहते हैं। नगर की जन संख्या ७४२४ है। यहां के अधिकतर लोग किसान हैं। कुछ गड़रिये हैं। थोड़े से लोग बगीचों में काम करते हैं। निचली गेलिली की पहाड़ियों से घिरा हुआ नाज़रथ का दृश्य बड़ा सुन्दर मालूम होता है। वसन्त ऋतु में नीबू, अंजीर, ज़ैतून और दूसरे पेड़ फूलते हैं तब यह दृश्य और भी अधिक सुन्दर हो जाता है। लेकिन वास्तव में यीशु के जीवन से सम्बन्ध होने के कारण नगर का महत्व बढ़ गया है। यहां ईसाइयों की कई धार्मिक संस्थायें हैं। कुमारी का फव्वारा लैटिन भिक्षुओं का मठ और गिरजे दर्शनीय स्थान हैं।

बैतलहम नगर यरूशलम से ५½ मील की दूरी पर स्थित है। जाफा दरवाजे से हिनोम की घाटी में उतरने पर एक ओर यहूदियों का कृषि-उपनिवेश पड़ता है। एक मील आगे मागी कुआ है। कहा जाता है कि यीशु का पता लगाने वाले मागियों ने इस कुए से पानी पिया था। कहते हैं कि इस कुएँ का पानी कभी नहीं सूखता है।

बेतलहम नगर एक ऊँचे टीले के ऊपर बसा है।



सफेद घरों के नीचे पहाड़ी ढालों पर ज़ैतून के पेड़ लगे हुए हैं। नीचे की उपजाऊ घाटी में खेती होती है। बेतलहम में लगभग ७ हज़ार मनुष्य रहते हैं। इनमें अधिकतर ईसाई हैं। बेतलहम शब्द का अर्थ है (बेत-घर लहम, रोटी) रोटी का घर। इसके पड़ोस की घाटी उपजाऊ होने के कारण शायद यह नाम पड़ा। बेतलहम नगर का नाम इतिहास में प्राचीन समय से आता है। इसने कई बार उत्थान और पतन देखा। यहां का नेटिविटी गिरजाघर दुनिया के अत्यन्त प्राचीन गिरजाघरों में से एक है। यहीं एक गुफा की चरनी में यीशु का जन्म हुआ था। कहा जाता है कि इस प्राचीन गिरजे को खलीफाओं और दूसरे मुसलमानों ने भी नहीं छेड़ा था।

हेब्रोन नगर की जन संख्या १६५७७ है इस में १६०७४ मुसलमान और ४३० यहूदी हैं। हेब्रोन नाम इब्राहीम से बिगड़ कर बना है जिसे अरबी में खलील-अर-रहमान या ईश्वर का प्यारा भी कहते हैं। यह नगर दो उपजाऊ टीलों के बीच में स्थित एक चपटी घाटी पर स्थित है। समुद्र तल से इस नगर की उँचाई ३०४०

फुट है उपजाऊ ढालों पर बग़ीचे लगे हुए हैं। यह नगर भी पुराना है। पुरानी चारदीवारी नष्ट हो चुकी है। एक दरवाज़ा शेष बचा है। नगर के घर सफेद और कुछ साफ हैं। लेकिन गलियां तंग और टेढ़ी हैं। नगर के पास दो पुराने तालाब हैं।

बीरशबा इस समय एक छोटा नगर है। इसमें केवल २३५६ मनुष्य रहते हैं। यह नाम अरबी के बीर-अस-सबा से बिगड़ कर बना है। इसका अर्थ है शपथ या सौगन्द का कुआ। कहते हैं कि इब्राहीम ने इसी कुएँ के पास सौगन्द ली थी। नगर के पास कई पुराने कुएँ हैं। लेकिन वे इतने पुराने नहीं हैं जितने पुराने बताये जाते हैं। यहां से प्रधान रेलवे की एक शाखा लाइन राफा को गई है यहां से गाज़ा के लिये रेल मिलती है।

बेत जिब्रीन एक छोटा मुसलमानी नगर है। इसका अर्थ है जिब्रायल का घर। इसमें लगभग १००० मनुष्य रहते हैं। दक्षिणी पेलेस्टाइन में यह एक बहुत सुन्दर नगर है।

तबरिया नगर गेलिली झील के किनारे पर समुद्र-तल से ६८१ फुट नीचे स्थित है। पहाड़ों से घिरी हुई

गेलिली झील का दृश्य बड़ा सुन्दर है। इस नगर में लगभग ७००० मनुष्य बसते हैं। पुराने समय में यह नगर कहीं अधिक बड़ा और समृद्धिशाली था। यहूदी लोग इस नगर को घृणा की दृष्टि से देखते थे क्योंकि वह कब्रिस्तान के ऊपर बसाया गया था और इस नगर के बसाने वाले हेरड एन्टीपास राजा ने मूर्ति पूजन आरम्भ कराया था। इसके पड़ोस में प्रसिद्ध स्नानागार हैं। धीरे धीरे करके यहूदी लोग इस नगर के पुराने कलंक को भूल गये और यहां आकर बसने लगे। यहां गेलिली झील में एक आश्चर्य-कर्म किया था। लेकिन यहाँ के लोग बहुत थोड़ी संख्या में बड़ी कठिनाई से ईसाई हुए। ११८७ में सुल्तान सलादीन का इस नगर पर अधिकार हो गया। यहूदियों का विश्वास है कि मसाया आकर अपने भक्तों को तबरिया में ही इकट्ठा करेगा।

लिड नगर को लुड भी कहते हैं। प्राचीन समय में इसे डायस पोलिस कहते थे। पहले यह पेलेस्टाइन में एक महत्वपूर्ण स्थान था। वर्तमान समय में कन्तारा-हैफा और जाफा-यरूशलम रेलवे लाइनों का प्रधान जंकशन

है। ८,००० मनुष्यों की आबादी वाला लिद् नगर ज़ैतून के बगीचों के बीच में घिरा हुआ है। यहाँ अधिकतर मुसलमान रहते हैं। इस प्राचीन नगर को रोमन काल में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। कभी यहाँ के निवासी गुलाम बना लिये गये। कभी नगर नष्ट कर डाला गया। कहते हैं कि यीशु के चेले पीटर ने इसी नगर में एक कोढ़ी को चंगा किया था। पहले यहां के लोग ईसाई न थे। छठी शताब्दी में यहां पहला गिरजा बना। अरबी शासनकाल में लिद् नगर को बड़ा धक्का पहुँचा। कहते हैं कि जहां प्राचीन गिरजाघर था वहां अरबी मुसलमानों ने अपनी मस्जिद बनवाई।

जाफा नगर यरूशलम का प्रधान बन्दरगाह है। इसकी जन-संख्या लगभग ४८,००० है। इनमें लगभग ३०,००० मुसलमान हैं। यहां हर साल २०,००० से ५०,००० तक यात्री तीर्थ यात्रा करने आते हैं। इनमें यहूदी, ईसाई और मुसलमान रहते हैं। इसी बन्दरगाह से पेलेस्टाइन की प्रधान उपज (जाफा नारंगी, कपास, तिल और चमड़ा आदि) बाहर भेजी जाती है। यहां कई मिशनरी सोसाइटी और स्कूल हैं। प्राचीन फोनि-

शियन और फिलस्तीन लोगों के समय में भी जाफा (याफा) एक प्रसिद्ध नगर था।

प्राचीन नगर, अरबी बाज़ार, बन्दरगाह के अतिरिक्त यहां अनार, अंजीर, बादाम और नारंगी के बगीचे बड़े मनोहर हैं। इन बगीचों में हवा बड़ी सुगन्धित रहती है। यहाँ से दक्षिण की ओर एक सड़क गाज़ा को और उत्तर-पूर्व की ओर नाबुलस और यरूशलम को जाती है।

जाफा के उत्तर में भूमध्यसागर के किनारे पर बसा हुआ तेल-अबीब एक नया यहूदी उपनिवेश है। तेल-अबीब पहले जाफा या याफा का एक बाहरी भाग था। बड़ी लड़ाई के बाद यह बहुत तेज़ी से बढ़ा और पेलेस्टाइन भर में सब से बड़ा नगर बन गया। यहाँ यहूदियों की प्रधानता है। यहीं उनके बहुत से स्कूल, अस्पताल और नये ढंग के खेत हैं। यह शहर एकदम योरुपीय ढांचे पर बना है और पेलेस्टाइन में सबसे बड़ा यहूदी-दिमागी-केन्द्र माना जाता है। यहीं ज़िअनिस्ट आन्दोलन का अड्डा है। इस शहर की जन-संख्या इतनी तेज़ी के साथ बढ़ी कि यही नगर इस समय पेलेस्टा-

रूस भर में सब से बड़ा नगर (उस आबादी का) हो गया है।

नाबुलस नगर को सेचेम भी कहते हैं। इसका अर्थ गर्दन है। सचमुच यह नगर उस दर्रे के बीच में स्थित है जो समरिया को जार्डन घाटी से मिलाता है। अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण प्राचीन समय से नाबुलस का उल्लेख पेलेस्टाइन के इतिहास में आता है। इब्राहीम मूसा, सम्राट सुलेमान आदि सभी प्रसिद्ध व्यक्तियों का सम्बन्ध इस शहर से रहा है।

जेरिको एक छोटा (जन-संख्या लगभग १,०००) और गन्दा नगर है। समुद्रतल से ८२० फुट नीचे स्थित होने के कारण यहां सख्त गरमी पड़ती है। यह नगर प्राचीन समय में बहुत प्रसिद्ध रहा है। यहां से मरा सागर को सुगम मार्ग है।

तेलहम या कपरनौम में एक बहुत पुराने यहूदी मन्दिर (सिनागाग) के खंडहर मिलते हैं। यीशु के समय में यह एक प्रसिद्ध नगर था। लेकिन यहाँ के लोग यीशु के विरुद्ध हो गये। इसलिये यहाँ के लोगों को नरक जाने के लिये शाप मिला हुआ है।



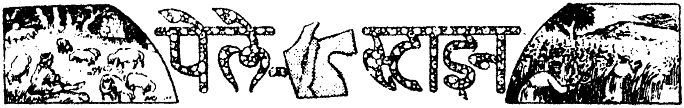
सफद या सफेद पैलेस्टाइन का सबसे अधिक उत्तरी नगर है। यहाँ ८७६१ मनुष्य रहते हैं। बड़ी लड़ाई के पहले यह एक तुर्की हाकिम के रहने की जगह थी। उस समय इसकी आबादी २०,००० थी। यहां के यहूदी घर पहाड़ के ढाल पर इस प्रकार बने हुये हैं कि दूर से देखने पर एक जीने के रूप में मालूम पड़ते हैं। कभी कभी ऊपरी भाग के रहने वाले अपने नीचे के पड़ोसी की छत से रास्ता का काम लेते हैं और उस पर से आज़ादी से चलते हैं। यहूदी लोग इस शहर को बड़ा पवित्र मानते हैं। यह उनके चार तीर्थों में से एक है। उनका विश्वास है कि यहोवा यहीं भक्तों को दर्शन देगा

बीर अयूब या जोब का कुआं बड़ा विचित्र है। यह कुआं १२५ फुट गहरा है। सरदी की ऋतु में वर्षा होने पर यह उमँड आता है। तीन चार दिन तक इसका पानी ऊपर बहता रहता है। उस समय दूर दूर के लोग इसका दृश्य देखने आते हैं। कहते हैं कि इस कुएँ का एक अभ्यन्तर (भीतर बहने वाले नाले) से सम्बन्ध है। इसी से यह उमँड़ कर बहने लगता है।

देश दर्शन

हैफा नगर पेलेस्टाइन के उत्तरी ज़िले का प्रधान नगर और पेलेस्टाइन रेलवे विभाग और कृषि विभाग का सब से बड़ा केन्द्र (हेड कार्टर) है। हैफा को कुछ लोग कैफा भी कहते हैं। इस छोटे नगर की जनसंख्या केवल २५००० है। लेकिन यहाँ का बन्दरगाह बहुत सुन्दर है। बन्दरगाह एकर की खाड़ी के दक्षिणी सिरे पर स्थित है। इसके पीछे कार्मल पर्वत या माउंट कार्मल हैफा नगर बहुत पुराना नहीं है। ११८७ में सलादीन यहां किलेबन्दी कराई थी। १७९९ में नेपोलियन ने इस नगर को जीत लिया था। हजाज़ रेलवे के बन जाने से हैफा नगर का महत्व बढ़ गया। गेहूँ, मकई, तिल और तेल यहाँ की प्रधान उपज है। यहाँ शराब भी बढ़िया बनती है। हाफा नगर धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है। नये मकान कार्मल पर्वत के ढालों पर बनाये जा रहे हैं।

एकर नगर में ६४२० मनुष्य रहते हैं। यह बन्दरगाह एक छोटे अन्तरीप पर बसा है। नगर के घरों की दीवारें कुछ पुरानी और बड़ी मज़बूत हैं। नगर पुराना है। इसका उल्लेख इतिहास में भी आता है।



दियरा या एड्रेई पेलेस्टाइन के अत्यन्त प्राचीन और विचित्र नगरों में से एक है। यह दो पठारों के बीच यारमुक की कन्दरा में बसा हुआ है। यहां की गुफायें बड़ी विचित्र हैं। वास्तव में यहां ज़मीन के नीचे बसा हुआ एक नगर सा मालूम पड़ता है।

अज़रा लावा के ढेर के ऊपर बसा हुआ एक प्राचीन स्थान है। इसके खंडहर तीन मील के घेरे में फैले हुए हैं।

गाजा नगर दक्षिणी पेलेस्टाइन का प्रधान नगर रहा है। गाजा नगर में इस समय लगभग १७००० मनुष्य रहते हैं। बड़ी लड़ाई के पहले यहां की जनसंख्या ४२,००० थी। गाजा नगर एक ऊँची पहाड़ी पर बसा हुआ है। बीच में रेतीले टीले आ जाने के कारण बन्दरगाह शहर से दिखाई नहीं पड़ता है। इसके पड़ोस में गेहूँ और जौ बहुत होता है। कपड़ा बुनने और गोटे का काम भी अच्छा होता है। यहाँ के मिट्टी के बर्तन काले होते हैं लेकिन दूर दूर तक बिकते हैं। गाजा के पड़ोस में कई ऐतिहासिक घटनायें हुईं। वहाँ कई दर्शनीय स्थान हैं।

———

देश दर्शन

यात्रा

दमश्क से यरूशलम के लिये मोटर का मार्ग बड़ा मनोहर है। कुछ दूर तक हरी भरी घाटी मिलती है। पानी की धारा बहुत चौड़ी नहीं है। पर इसी के सहारे मेहनती अरबी किसान गेहूँ, जौ और दूसरी फसलें उगाते हैं। अधिक आगे ज़मीन भूरी और खुश्क हो जाती है। ऊपर सब से अधिक ऊँची चोटियों पर दूर से बरफ दिखाई देती है। घाटी में इसी बरफ का पिघला हुआ पानी आता है। इधर से जो हवा चलती है वह मई और जून की दुपहरी में भी ठंड से रोंगटे खड़े कर देती है। इस हवा से बचने के लिये तेज धूप होने पर भी गरम बनियाइन पहननी पड़ी! दूसरे यात्रियों ने तो और भी मोटे मोटे कपड़े पहन लिये।

मोटर का ऊँचा नीचा मार्ग कुछ दूर तक रेल-मार्ग के समानान्तर चलता है। फिर मोटर का मार्ग दूसरी ओर को मुड़ जाता है। इस ओर कभी कभी बड़ा विचित्र दृश्य देखने में आता है। ऊँटों का गिरोह सामान लादे हुए आगे चलता है। मालिक गधे पर सवार होकर

पीछे की ओर रहता है और तरह तरह की आवाज़ देकर उन्हें हांकता जाता है। कहीं खेतों में काम करने वाले अरबी किसान मिलते हैं। कहीं दूर सूखे भागों में गड़रिया लम्बे कान वाली भेड़ें चराता है। अधिकतर भाग सुनसान पथरीला और उजाड़ है।

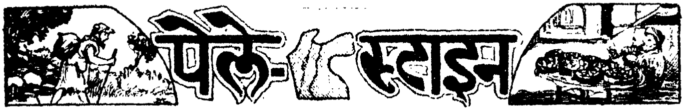
पाँच घंटे चलने के बाद सिरिया की सीमा आगई। सीमा के पास ही एक छोटी नदी है। जब तक मोटर पुलिस वालों को पासपोर्ट दिखलाने के लिये ठहरा, कुछ लोग पानी पीने चले गये। पर गहरी घाटी में स्थिति होने के कारण नदी से ऊपर आने में काफी समय लगा। पुल पार करते ही हम लोग पेलेस्टायन में आगये। चुंगी घर वहाँ से दो तीन मील और आगे है। चुंगीघर के पास रास्ता रुका हुआ था। मोटर ठहर गया। पासपोर्ट और सामान की कड़ी जाँच हुई। सामान उतारने का काम यहां के कुलियों ने किया था। उनको तीन आने की बंडल के हिसाब से देना पड़ा। मैंने अपने साथ सिरिया की दो बड़ी बड़ी मीठी नारंगी रख ली थी। सूखे फल समाप्त करने के बाद उन्हें खाने की सोची थी। लेकिन चुंगी वाले उन्हें भी उठा ले गये। मैंने उनसे

कहा कि मैं उन्हें यहीं खालूंगा और जरूरत हो तो फिर



२७—अरबी स्त्रियां कालीन बुन रही हैं।

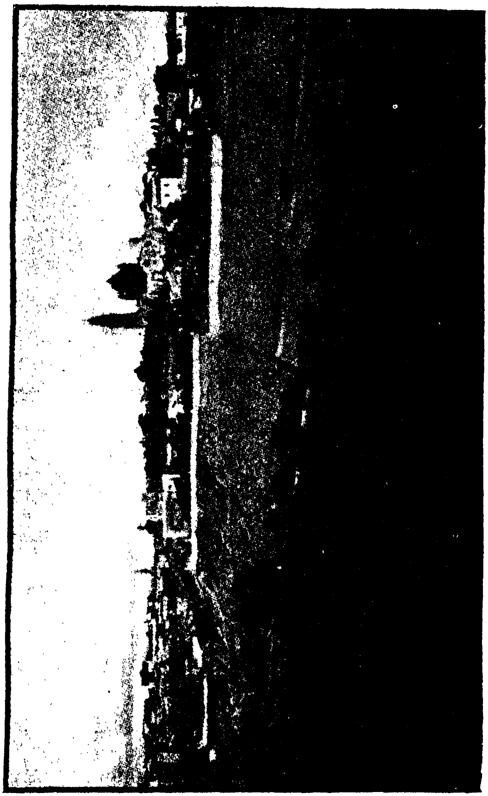
से उनका मूल्य ब्रिटिश सरकार को दे दूँगा। लेकिन



एक न सुनी गई। वास्तव में चुंगी वालों का पेट इसी तरह की लूट खसोट से भरता है।

लगभग एक घंटे में प्रस्थान हुआ। सूखी नंगी चूने की सफेद चट्टानों के बीच में लगातार चलना पड़ता था दो तीन घंटे में गेलिली झील दिखाई देने लगी। यह बहुत नीचे में स्थित है। इस ओर कृषि विभाग की ओर से नये पेड़ लगाये गये हैं। आगे बढ़ने पर तबरिया नगर (समुद्रतल से ६८१ फुट नीचा) है। यह पहले और भी अधिक बड़ा था। पर आजकल खंडहर बहुत हैं। नगर की आबादी लगभग ७ हजार है। यहां यहूदी अधिक हैं। कुछ नये मकान बन गये है। झील के किनारे बहुत सी नावें रहती हैं। यहीं से एक मार्ग हैफा को दूसरा यरूशलम को जाता है। मैं यरूशलम जाने वाले मोटर पर सवार हुआ। इस ओर को यात्रा में बाइबिल की घटनायें सामने खड़ी हो जाती हैं। इस ओर की भूमि को महात्मा यीशू ने अपने जीवन से पवित्र किया था। तबरिया से १६ मील की दूरी पर नाज़रथ है। इस छोटे से नगर में जन्म लेकर महात्मा यीशू ने इसे जगत्प्रसिद्ध कर किया। आजकल संसार भर के धर्म-भीरु ईसाई इस

नगर का दर्शन करने को तरसते हैं। जिन्हें यहां रहने



३७—हिनोम की घाटी से सिय्योन पर्वत का एक दृश्य

का सौभाग्य प्राप्त होता है वे अपने को धन्य मानते हैं।

यहां योरुप के भिन्न भिन्न देशों की ओर से कई अस्पताल आर गिरजाघर बने हुए हैं। फिर भी यहाँ की औरतों का पहरावा बड़ी पुरानी चाल का है।

आगे बढ़ने पर जज़रील का मैदान है। अफ़गूल के पास मोटर की सड़क रेलवे लाइन को पार करती है। कुछ दूर तक दोनों एक दूसरे के समानान्तर चलती हैं। यहां से यरूशलम काफी दूर है। मोटर रात में पहुंचा। मेरे साथ कुछ यहूदी थे। वे अपने होटल में चले गये। उनकी बातचीत से पता लगा कि यहूदी होटल वाले ग़ैर यहूदियों को पसन्द नहीं करते हैं। इसलिये मैंने तकिया तुल हिनूद का दरवाज़ा खटखटाया। पाठकों को ज्ञात हो कि यरूशलम ईसाई, यहूदी, और मुसलमान तीनों ही धर्मों के लिये पवित्र स्थान है। यहूदी लोग दुनिया के दूसरे भागों में व्यापारादि से धन इकट्ठा करके बुढ़ापे में अपने जीवन के शेष दिन बिताने आते हैं। ईसाइयों का यहां जबरदस्त अड्डा है। पर मुसलमान भी इस स्थान को पाक समझते हैं और दूर दूर से इसकी ज़यारत करने आते हैं। भिन्न भिन्न देशों के मुसलमानों के लिये ठहरने का स्थान अलग अलग है। जहाँ हिन्दुस्तान

के मुसलमान ठहरते हैं उसे तकियातुल हिन्दू कहते हैं।



३८—जार्डन नदी का एक दृश्य

इसका अहाता बहुत बड़ा है। मैंने कई आवाज़ें लगाईं।

कुछ उत्तर न मिलने पर मैं फिर मोटर के पास लौट गया। उसने मुझे आम सड़क पर स्थित एक मुसलमानी होटल के दरवाजे पर उतार दिया। मैंने सड़क की ओर वाला ऊपर का खुला कमरा पसन्द किया।

यहाँ गरमी के दिनों में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। हवा चलने पर जाड़ा और भी अधिक बढ़ जाता है। कमरे के अन्दर ही सोना पड़ा। होटल का बिस्तर भी साफ न था। पर होटल में पीने का पानी अच्छा था।

दूसरे दिन मैंने मरासागर (डेडसी) में स्नान करने की तयारी की। यरूशलम से जेरिको को बराबर मोटर आते जाते रहते हैं। लेकिन जेरिको से मरासागर को बहुत कम मोटर मिलते हैं। घंटों ठहरने के बाद एक मोटरवाला समुद्र तट तक जाने को तयार हुआ। पर समुद्र के पास पहुंच कर सारी मेहनत सफल हो गई। सूखे किनारे क्रमशः ऊँचे होते गये हैं। उन पर नजर डालने से करोड़ों वर्षों का पार्थिव इतिहास सामने खड़ा हो जाता है। चिरकाल से पानी बाहर न निकलने के कारण इसमें नमक की मात्रा इतनी अधिक हो गई है कि कोई मछली या दूसरा जीवधारी इस पानी में जिन्दा

नहीं रह सकता। इसी नमक और दूसरे रसायनिक पदार्थों को निकालने का काम यहाँ एक कम्पनी कर



३६—हेब्रॉन का विहङ्गम दृश्य

रही है। कारखाने के पास ही नहाने का स्थान है। हवा के कारण समुद्र में लहरें काफी ऊँची उठ रही थीं। कपड़े बदल कर मैं झट पानी में कूद पड़ा। इस पानी में बहुत अधिक भारीपन (गुरुत्व) था। दस पाँच हाथ अन्दर बढ़ने पर मैंने तैरना बन्द कर दिया। लेकिन हाथ पैर न चलाने पर भी मेरा सिर पानी के ऊपर ही रहता था। फिर मैंने गहरे पानी में डुबकी लगाने की कोशिश की लेकिन पानी के नीचे जाना असम्भव था। संसार भर में केवल यही एक ऐसा समुद्र है जहाँ तैरना न जानने वाला भी डूब नहीं सकता। यदि कोई बिना डुबकी खाये तैरना सीखे तो उसके लिये मरासागर सब से अच्छा स्थान है। पानी पर लेटने में झूले का आनन्द आता है। लेकिन पानी आँख और नाक में मिरचे की तरह लगता है। इसलिये थोड़ी ही देर में मैं पानी के बाहर निकल आया। भीगा कपड़ा खूब निचोड़ने पर भी पहले से काफी अधिक मोटा हो गया। इस प्रकार चिरस्मरणीय स्नान समाप्त कर शाम को मोटर द्वारा मैं फिर यरूशलम लौट आया।

वर्तमान यरूशलम चार पहाड़ियों पर बसा हुआ

है। वैसे यह शहर कई बार बसा और कई बार उजड़ा। पुराने शहर की चारदीवारी और दरवाज़े दूसरे पूर्वी शहरों की तरह हैं। पर चौड़ी सड़क और शीशेदार योरुप के ढंग की बड़ी दुकानों से सजा हुआ भाग तेजी से बढ़ रहा है। जाफा दरवाजा और दमश्क दरवाजा से आरम्भ होने वाली दो बड़ी बड़ी सड़कें शहर को चार बड़े भागों में बाँटती हैं। उत्तरी पूर्वी भाग में मुसलमानी मुहल्ला है। दक्षिणी-पूर्वी भाग में यहूदी लोग बसे हुए हैं। दक्षिणी-पश्चिमी भाग में आर्मेनियन और उत्तरी-पश्चिमी भाग में यूनानी आदि हैं। मुसलमानी मुहल्ला बहुत घना बसा है। गलियां तंग हैं। दिन को भी कुछ अँधेरा रहता है। पुरानी ऊँची चारदीवारी के बुर्ज से इन मुहल्लों का विहंगम दृश्य सामने आ जाता है। मुसलमानों और यहूदियों में अक्सर झगड़ा हो जाता है। दंगे के दिनों में जान माल की रक्षा करना कोई साधारण काम नहीं है।

यों तो यहूदियों और मुसलमानों में पुराने समय में झगड़ा चला आ रहा है। पर बड़ी लड़ाई के बाद धनी यहूदियों ने सामूहिक रूप से गरीब मुसलमानों की

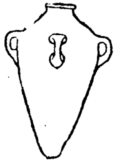
जमीन मोल लेकर पेलेस्टायन में बसने का प्रयत्न किया तब से यह वैमनस्य और भी अधिक बढ़ गया। यहूदी लोग भिन्न भिन्न देशों से आकर यहीं बसने लगे। यहूदी भाषा और धर्म ही उनको एकता के सूत्र में बाँध रहे हैं। उनमें विद्या की भी बृद्धि हो रही है। इसलिये दिमागी सारे काम यहूदियों के हाथ में हैं। वे ऊंचे ऊंचे सरकारी पदों पर हैं। मुसलमान अधिकतर खेतिहर, चरवाहे और मजदूर हैं। पर उनको संगठित करने का भी प्रयत्न हो रहा है।

यरूशलम के गिरजाघरों, मस्जिदों और यहूदी मन्दिरों को देखने के लिये कई सप्ताह चाहिये। पर यहूदियों की क्रन्दन-दीवार (wailing wall) विशेष उल्लेखनीय है। यहां श्रद्धालु यहूदी स्त्री-पुरुष दीवार से चिपक कर फूट फूट कर रोते और सिसकते हैं। यहीं मनचाही चीजों के लिये प्रार्थना करते हैं। कहते हैं कि यहां की हुई प्रार्थना उनकी सारी मनोकामनायें पूरी करती हैं।

दूसरी ओर प्रसिद्ध मुसलमानी मस्जिद है। पास ही चुने हुए लोगों की कब्रें हैं। यहीं मौलाना मुहम्मद

अली की भी कब्र है। शहर के गिरजा घर ईसाई संसार में सर्व प्रसिद्ध हैं। यहाँ एक बगीचे से यीशू का स्वर्गारोहण हुआ था। सभी देशों के ईसाई बड़ी श्रद्धा से इस शहर को देखते हैं। लेकिन यहूदी लोग यीशू की कुछ भी परवाह नहीं करते हैं। एक यहूदी मुझसे कहता था "न जाने क्यों इसाइयों ने एक मामूली बढ़ई के लड़के को इतना बढ़ा रक्खा है। हम लोग उसको कुछ भी नहीं समझते हैं।"

शहर देख कर दूसरे दिन मैंने अलकन्तारा (स्वेज नहर पर बसे हुए नगर) के लिये रेल द्वारा प्रस्थान किया।



४०



४१